सव्वावयवसमूहो धम्मत्थिया णाम। एदस्स धम्मत्थियअवयविस्स सगअवयवेहि जो बंधो सो धम्मत्थियबंधो णाम। तस्स अद्धप्पहुडि जाव चदुब्भागं त्ति सो धम्मत्थियदेसो णाम। तेसिं धम्मत्थियदेसाणं सगअवयवेहि जो बंधो सो धम्मत्थियदेसबंधो णाम। तस्सेव चदुब्भागप्पहुडि पदेसा णाम। तेसिमण्णोण्णबंधो धम्मत्थियपदेसबंधो त्ति भण्णदि। एवमधम्मत्थिय-आगासत्थियाणं पि परूवणा कायव्वा। एदासिं तिण्णं पि अत्थियाणमण्णोण्णपदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादियविस्ससाबंधो णाम।

धर्मद्रव्यके सब अवयवोंके समूहका नाम धर्मास्तिक है। अवयवीरूप इस धर्मास्तिकका अपने अवयवोंके साथ जो बन्ध है वह धर्मास्तिकबन्ध कहलाता है। इसके आधेसे लेकर चौथे भाग तकके हिस्सेको धर्मास्तिकाय कहते हैं। इन धर्मास्तिकके देशोंका अपने अवयवोंके साथ जो बन्ध है वह धर्मास्तिकदेशबन्ध कहलाता है। और इसीके चौथे भागसे लेकर आगेके सब अवयव प्रदेश कहलाते हैं। इनका परस्पर जो बन्ध है वह धर्मास्तिकप्रदेशबन्ध कहलाता है। इसी प्रकार अधर्मास्तिक और आकाशास्तिकका भी कथन करना चाहिए। इन तीनों ही अस्तिकायोंका परस्परमें जो प्रदेशबन्ध होता है वह सब अनादि विस्रसाबन्ध है।

जो सो थप्पो सादियविस्ससाबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- वेमादा णिद्धदा वेमादा ल्हुक्खदा बंधो।।३२।।

जो सादि विस्रसाबन्ध स्थगित कर आये हैं उसका निर्देश इस प्रकारका है -- विसदृश स्निग्धता और विसदृश रूक्षता बन्ध है।।३२।।

मादा णाम सरिसत्तं। विगदा मादा विमादा। विमादा णिद्धदा विमादा ल्हुक्खदा च बंधो होदि, बंधकारणं होदि त्ति वुत्तं होदि। कधं कारणस्स कज्जववएसो? कारणे कज्जुवयारादो। णिद्धदाए विसरिसत्तं ल्हुक्खदं पेक्खिदूण ल्हुक्खदाए विसरिसत्तं णिद्धदं पेक्खिदूण घेत्तव्वं। तेण णिद्धपरमाणूणं ल्हुक्खपरमाणूहि सह बंधो होदि। ल्हुक्खपरमाणूणं पि णिद्धपरमाणूहि सह बंधो होदि, गुणेण सरिसत्ताभावादो।

मादाका अर्थ सदृशता है। जिसमें सदृशता नहीं होती उसे विमादा कहते हैं। विसदृश स्निग्धता और विसदृश रूक्षता यह बन्ध है अर्थात् बन्धका कारण है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका -- कारणको कार्य क्यों कहा?

समाधान -- कारणमें कार्यका उपचार होनेसे ऐसा कहा है।

यहाँ स्निग्धतामें विसदृशता रूक्षताकी अपेक्षा और रूक्षतामें विसदृशता स्निग्धताकी अपेक्षा लेनी चाहिए। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला कि स्निग्ध परमाणुओंका रूक्ष परमाणुओंके साथ बन्ध होता है और रूक्ष परमाणुओंका भी स्निग्ध परमाणुओंके साथ बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ गुणकी अपेक्षा समानता नहीं पायी जाती।

समणिद्धदा समल्हुक्खदा भेदो।।३३।।

समान स्निग्धता और समान रूक्षता भेद है।।३३।।

समणिद्धदा समल्हुक्खदा च भेदस्स असंजोगस्स कारणं होदि। णिद्धपरमाणूणं णिद्धपरमाणूहि ल्हुक्खपरमाणूणं ल्हुक्खपरमाणूहि सह बंधो णत्थि त्ति भणिदं होदि। णिद्धपरमाणूहि सह बंधमागदल्हुक्खपरमाणू जदि णिद्धगुणेण परिणदा होंति, णिद्धपरमाणू वा ल्हुक्खगुणेण परिणदा, तो णिच्छएण भेदण होदव्वमिदि घेत्तव्वं। एदं अत्थं दोहि वि देत्तेहि परूविदं गाहाए फुडीकरणमुत्तरसुत्तं भणदि --

समान स्निग्धता और समान रूक्षता भेद अर्थात् असंयोगका कारण होता है। स्निग्ध परमाणुओंका स्निग्ध परमाणुओंके साथ और रूक्ष परमाणुओंका रूक्ष परमाणुओंके साथ बन्ध नहीं होता, यह उक्त कथनका तात्पर्य है। स्निग्ध परमाणुओंके साथ बन्धको प्राप्त हुए रूक्ष परमाणु यदि स्निग्ध गुणरूपसे परिणत होते हैं या स्निग्ध परमाणु रूक्ष गुणरूपसे परिणत होते हैं तो नियमसे उनका भेद हो जाता है, यह अर्थ यहाँ लेना चाहिए। यह अर्थ दोनों ही सूत्रोंके द्वारा कहा गया है। अब गाथा द्वारा इसी अर्थको स्पष्ट करनेके लिए आगेका गाथासूत्र कहते हैं --

णिद्धाणिद्धा ण बज्झंति ल्हुक्खाल्हुक्खा य पोग्गला।

णिद्धल्हुक्खा य बज्झंति रूवारूवी य पोग्गला।।३४।।

स्निग्ध पुद्गल स्निग्ध पुद्गलोंके साथ नहीं बँधते, रूक्ष पुद्गल रूक्ष पुद्गलोंके साथ नहीं बँधते। किन्तु सदृश और विसदृश ऐसे स्निग्ध रूक्ष पुद्गल परस्पर बँधते हैं।।३४।।

एदिस्से गाहाए पढमद्धेण समणिद्धदा समल्हुक्खदा भेदो त्ति एदस्स अत्थो परूविदो। णिद्धपरमाणू णिद्धपरमाणूहि ण बज्झंति (*अ का प्रत्योः 'माणूणहि बज्झति', आ प्रतौ 'माणूहि बज्झंति' इति पाठः।), णिद्धगुणभावेण समाणत्तादो। ल्हुक्खा पोग्गला ल्हुक्खपोग्गलेहि सह बंध णागच्छंति, ल्हुक्खगुणभावेण समाणत्तादो। बिदियद्धेण पढमसुत्तद्धं परूवेदि। 'णिद्ध-ल्हुक्खा य बज्झंति' णिद्धा पोग्गला ल्हुक्खा पोग्गला च परोप्परं बंधमागच्छंति, विसरिसत्तादो। णिद्धल्हुक्खपोग्गलाणं किं गुणाविभागपडिच्छेदेहिं सरिसाणं बंधो (* प्रतिषु 'सरिसाणं

णिद्धल्हुक्खापोग्गलाणं बंधो' इति पाठः।) होदि आहो विसरिसाणं बंधो होदि त्ति पुच्छिदे 'रूवारूवी य पोग्गला बज्झंति' त्ति भणिदं। गुणाविभागपडिच्छेदेहि समाणा जं णिद्धल्हुक्खगुणजुत्तपोग्गला ते रूविणो णाम, ते वि बज्झंति। विसरिसा पोग्गला अरूविणो णाम, ते वि बंधमागच्छंति। णिद्धल्हुक्खपोग्गलाणं गुणाविभागपडिच्छेदसंखाए सरिसाणमसरिसाणं च बंधो होदि त्ति भणिदं होदि।

इस गाथाके पूर्वार्ध द्वारा 'समणिद्धदा समल्हुक्खदा भेदो' इस सूत्रका अर्थ कहा गया है। स्निग्ध परमाणु दूसरे स्निग्ध परमाणुओंके साथ नहीं बँधते, क्योंकि, स्निग्ध गुणकी अपेक्षा वे समान हैं। रूक्ष पुद्गल दूसरे रूक्ष पुद्गलोंके साथ बन्धको नहीं प्राप्त होते, क्योंकि, रूक्ष गुणकी अपेक्षा वे समान हैं।

गाथाके उत्तरार्ध द्वारा प्रथम सूत्रका अर्थ कहते हैं -- 'णिद्धल्हुक्खा य बज्झंति' अर्थात् स्निग्ध पुद्गल और रूक्ष पुद्गल परस्पर बन्धको प्राप्त होते हैं, क्योंकि, इनमें विसदृशता पायी जाती है। क्या गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा समान स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका बन्ध होता है या अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा विसदृश स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका बन्ध होता है, ऐसा प्रश्न करनेपर 'रूवारूवी य पोग्गला बज्झंति' यह कहा गया है। जो स्निग्ध और रूक्ष गुणोंसे युक्त पुद्गल गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा प्रधान होते हैं वे रूपी कहलाते हैं। वे भी बँधते हैं। और विसदृश पुद्गल अरूपी कहलाते हैं। वे भी बन्धको प्राप्त होते हैं। स्निग्ध और रूक्ष पुद्गल गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी संख्याकी अपेक्षा चाहे समान हों चाहे असमान हों, उनका परस्पर बन्ध होता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

वेमादा णिद्धदा वेमादा ल्हुक्खदा बंधो।।३५।।

द्विमात्रा स्निग्धता और द्विमात्रा रूक्षता (परस्पर) बन्ध है।।३५।।

णिद्धपोग्गलाणं णिद्धपोग्गलेहि ल्हुक्खपोग्गलाणं ल्हुक्खपोग्गलेहि गुणविभागपडिच्छेदेहि सरिसाणमसरिसाणं च पुव्विल्लत्थे बंधाभावे संते तेसिं पि बंधो अत्थि त्ति जाणावणट्टं एदस्स सुत्तस्स बिदियो अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- मादा णाम अविभागपडिच्छेदो। किं पमाणं तस्स? जहण्णगुणवड्ढिमेत्तो। द्वे मात्रे यस्यां स्निग्धतायामधिके हीने वा द्विमात्रा (* अ आ का प्रतिषु 'द्विमात्रो' इति पाठः।) स्निग्धता, सो बंधो बंधकारणं होदि। णिद्धपोग्गला बेअविभागपडिच्छेदुत्तरणिद्धपोग्गलेहि वेअविभागपडिच्छेदहीणणिद्धपोग्गलेहि वा बज्झंति (* म प्रति पाठोऽयम्। अ आ का ता प्रतिषु '-- पोग्गले हि ण बज्झंति' इति पाठः।)

तिण्णिआदिअविभागपडिच्छेदुत्तरपोग्गलेहि तिण्णिआदिअविभाग-पडिच्छेदुत्तरकमेण परिहीणपोग्गलेहि च बंधो णत्थि त्ति घेत्तव्वं। एवं ल्हुक्खपोग्गलाणं पि ल्हुक्खपोग्गलेहि सह बंधो वत्तव्वो। एदस्स अत्थस्स णिण्णयजणणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

गुणोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा सदृश और विसदृश ऐसे स्निग्ध पुद्‌गलोंका स्निग्ध पुद्‌गलोंके साथ और रूक्ष पुद्‌गलोंका रूक्ष पुद्‌गलोंके साथ पूर्वोक्त अर्थके अनुसार बन्धका अभाव प्राप्त होनेपर उनका भी बन्ध होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिए इस सूत्रका दूसरा अर्थ कहते हैं। यथा -- मात्राका अर्थ अविभागप्रतिच्छेद है।

शंका -- उसका प्रमाण कितना है?

समाधान -- गुणकी जघन्य वृद्धिमात्र उसका प्रमाण है।

जिस स्निग्धतामें दो मात्रा अधिक या हीन होती है वह द्विमात्रा स्निग्धता कहलाती है। वह बन्ध है अर्थात् बन्धका कारण है। स्निग्ध पुद्‌गल दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक स्निग्ध पुद्‌गलोंके साथ या दो अविभागप्रतिच्छेद कम स्निग्ध पुद्‌गलोंके साथ बँधते हैं। इनका तीन आदि अविभागप्रतिच्छेद अधिक पुद्‌गलोंके साथ और तीन आदि अविभागप्रतिच्छेद कम पुद्‌गलोंके साथ बन्ध नहीं होता, यह अर्थ यहाँ लेना चाहिए। इसी प्रकार रूक्ष पुद्‌गलोंका भी रूक्ष पुद्‌गलोंके साथ बन्धका कथन करना चाहिए। अब इस अर्थका निश्चय उत्पन्न करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

णिद्धस्स णिद्धेण दुराहिएण ल्हुक्खस्स ल्हुक्खस्स दुराहिएण।

णिद्धस्स ल्हुक्खेण हवेइ बंधो जहण्णवज्जे विसमे समे वा।।३६।।

स्निग्ध पुद्‌गलका दो गुण अधिक स्निग्ध पुद्‌गलके साथ और रूक्ष पुद्‌गलका दो गुण अधिक रूक्ष पुद्‌गलके साथ बन्ध होता है। तथा स्निग्ध पुद्‌गलका रूक्ष पुद्‌गलके साथ जघन्य गुणोंके सिवा विषम अथवा सम गुणके रहनेपर बन्ध होता है।।३६।।

णिद्धस्स पोग्गलस्स अण्णेण णिद्धपोग्गलेण जदि बंधो होदि तो दुराहिएणेव। ल्हुक्खस्स ल्हुक्खेण जदि बंधो तो वि दुराहिएण बंधो होदि। णिद्धस्स सव्वपोग्गलस्स ल्हुक्खेण सव्वेण पोग्गलेण सह बंधो होदि त्ति भणिदे 'विसमे समे वा'। गुणाविभागपडिच्छेदेहि ल्हुक्खपोग्गलेण सरिसो णिद्धपोग्गलो समो णाम। असरिसो विसमो णाम। तत्थ णिद्ध-ल्हुक्खेण पोग्गलाणं बंधो होदि (त्ति) सव्वेसिं पोग्गलाणं बंधे संपत्ते 'जहण्णवज्जे' त्ति भणिदं। जहण्णगुणाणं णिद्ध-

ल्हुक्खपोग्गलाणं सत्थाणेण परत्थाणेण वा णत्थि बंधो। एवं गुणविसिट्ठाणं पोग्गलाणं बंधो होदि, अण्णारिसाण पोग्गलाणं पुण भेदेण होदव्वं, बंधे विरुद्धगुणसमण्णिदत्तादो।

स्निग्ध पुद्गलका अन्य स्निग्ध पुद्गलके साथ यदि बन्ध होता है तो दो गुण अधिक स्निग्ध पुद्गलोंके साथ ही होता है। रूक्ष पुद्गलका अन्य रूक्ष पुद्गलके साथ यदि बन्ध होता है तो दो गुण अधिक रूक्ष पुद्गलके साथ ही होता है।

स्निग्ध सब पुद्गलका रूक्ष सब पुद्गलके साथ जो बन्ध होता है वह किस अवस्थामें होता है, ऐसा पूछनेपर 'विसमे समे वा' यह वचन कहा है। गुणके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा रूक्ष पुद्गलके साथ सदृश स्निग्ध पुद्गल सम कहलाता है और असदृश स्निग्ध पुद्गल विषम कहलाता है। यहाँ स्निग्ध और रूक्ष गुणके द्वारा पुद्गलोंका बन्ध होता है, इस नियमके अनुसार सब पुद्गलोंको बन्ध प्राप्त होनेपर 'जहण्णवज्जे' यह कहा है। जघन्यगुणवाले स्निग्ध और रूक्ष पुद्गलोंका न तो स्वस्थानकी अपेक्षा बन्ध होता है और न परस्थानकी अपेक्षा ही बन्ध होता है। इस तरह इस प्रकारके गुणविशिष्ट पुद्गलोंका बन्ध होता है और अन्यादृश पुद्गलोंका भेद होता है, क्योंकि, बन्धमें विरुद्ध गुणसे युक्त होना आवश्यक है।

विशेषार्थ -- पुद्गल परमाणुओंके बन्धके विषयमें दो परम्पराएँ उपलब्ध होती हैं। प्रथम परम्पराका निर्देश यहाँ किया ही है। इसके अनुसार निम्न व्यवस्था फलित होती है।

क्रमांक	गुणांश	सदृशबन्ध	विसदृशबन्ध
१	जघन्य + जघन्य	नहीं	नहीं
२	जघन्य + एकादिअधिक	नहीं	नहीं
३	जघन्येतर + समजघन्येतर	नहीं	है
४	जघन्येतर + एकाधिकजघन्येतर	नहीं	है
५	जघन्येतर + द्व्यधिकजघन्येतर	है	है
६	जघन्येतर + त्र्यादिअधिकजघन्येतर	नहीं	है

दूसरी परम्परा तत्त्वार्थसूत्रकी है। इसके अनुसार निम्न व्यवस्था फलित होती है --

क्रमांक	गुणांश	सदृशबन्ध	विसदृशबन्ध
१	जघन्य + जघन्य	नहीं	नहीं
२	जघन्य + एकादिअधिक	नहीं	नहीं
३	जघन्येतर + समजघन्येतर	नहीं	नहीं

४	जघन्येतर + एकाधिकजघन्येतर	नहीं	नहीं
५	जघन्येतर + द्व्यधिकजघन्येतर	है	है
६	जघन्येतर + त्र्यादिअधिकजघन्येतर	नहीं	नहीं

यद्यपि सर्वार्थसिद्धि और तत्त्वार्थवार्तिकमें 'णिद्धस्स णिद्धेण' इत्यादि गाथा उद्धृत की गयी है, पर इस गाथाके उत्तरार्धके अर्थमें मतभेद है और यह मतभेद तत्त्वार्थवार्तिकसे स्पष्ट हो जाता है। गाथाके उत्तरार्धका शब्दार्थ यह है कि स्निग्धगुणवाले परमाणुका रूक्षगुणवाले परमाणुके साथ सम या विषम गुण होनेपर बंध होता है। मात्र जघन्य गुणवालेका किसी भी अवस्थामें बन्ध नहीं होता। किन्तु तत्त्वार्थवार्तिकमें 'समे विसमे वा' इस पदमें समका अर्थ तुल्यजातीय और विषमका अर्थ अतुल्यजातीय किया है। तत्त्वार्थवार्तिककारके समक्ष वर्गणाखण्डके ये सूत्र उपस्थित थे, फिर भी उन्होंने यह अर्थ किया है। तत्त्वार्थसूत्रमें 'बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च' यह सूत्र आया है और इस सूत्रसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि तत्त्वार्थसूत्रके मतसे तुल्यजातीय और अतुल्यजातीय पुद्गलपरमाणुओंका बन्ध दो अधिक गुणके होनेपर ही होता है। यही कारण है कि तत्त्वार्थवार्तिककारने उक्त गाथांशका उक्त प्रकारसे अर्थ किया है।

से तं बंधणपरिणामं पप्प से अब्भाणं (* अ आ का प्रतिषु 'अत्थाणं' इति पाठः।) वा मेहाणं वा संज्झाणं वा विज्जूणं वा उक्काणं वा कणयाणं वा दिसादाहाणं वा धूमकेदूणं वा इंदाउहाणं वा से खेत्तं पप्प कालं पप्प उडुं पप्प अयणं पप्प पोग्गलं पप्प जे चामण्णे एवमादिया अंगमलप्पहुडीणि (* ता प्रतौ '-- प्पहुडि(डी)णि' इति पाठः।) बंधणपरिणामेण परिणमंति सो सव्वो सादियविस्ससाबंधो णाम।।३७।।

इस प्रकार वे पुद्गल बन्धनपरिणामको प्राप्त होकर विविध प्रकारके अभ्ररूपसे, मेघरूपसे, सन्ध्यारूपसे, बिजलीरूपसे, उल्कारूपसे, कनकरूपसे, दिशादाहरूपसे, धूमकेतुरूपसे व इन्द्रधनुषरूपसे क्षेत्रके अनुसार, कालके अनुसार, ऋतुके अनुसार, अयनके अनुसार और पुद्गलके अनुसार जो बन्धन परिणामरूपसे परिणत होते हैं वह सब सादिविस्त्रसाबन्ध है।।३७।।

से ते जहण्णगुणपोग्गलवदिरित्ता पोग्गला तं बंधणपरिणामं बंधकारणणिद्ध-ल्हुक्खगुणपरिणामं पप्प पाविदूण सव्वे णिद्ध-ल्हुक्खपोग्गला बंधमागच्छंति। णवरि णिद्धाणं णिद्धेहि ल्हुक्खाणं ल्हुक्खेहि पोग्गलेहि णत्थि बंधो। किंतु वेअविभागपडिच्छेदाहियाणं

णिद्धपोग्गलाणं वेअविभागपडिच्छेदहीणणिद्धपोग्गलेहि अत्थि बंधो। वेदविभागपडिच्छेदाहियल्हुक्खपोग्गलाणं च वेअविभागपडिच्छेदहीणल्हुक्खपोग्गलेहि य सह अत्थि बंधो। एवं बंधं पाविदूण से अब्भाणं (* अ आ का प्रतिषु 'अच्चाणं' इति पाठः।) वा अवारिसु वा मेहा अब्भा णाम, तेसिमब्भाणं सरूवेण तेसिं ते परिणमंति। वारिसु वा कसणवण्णा मेहा णाम। उदयत्थवण्णकाले पुव्वावरदिसासु दिस्समाणा जासवणकुसुमसंकासा संज्झा णाम। रत्त-धवल-सामवण्णाओ-तेजब्भहियाओ कुवियभुवंगो (*ता प्रतौ 'भुवं(ज)गो' इति पाठः।) व्व चलंतसरीरा मेहेसु उवलब्भमाणाओ विज्जूओ णाम। जलंतग्गिपिंडो व्व अणेगसंठाणेहि आगासादो णिवसंता उक्का णाम। माणुस-पसु-पक्खिमारणीयो तरु-गिरिसिहर-वियारणीयो असणीयो कणया णाम। उप्पायकाले अग्गिणा विणा दावाणलो व्व दिसासु उवलब्भमाणो दिसादाहो णाम। उप्पादकाले चेव धूमलट्ठि व्व आगासे उवलब्भमाणा धूमकेदू णाम। पंचवण्णा होदूण धणुवागारेण खुट्टागारेण वा पुव्वावरदिसासु उवलब्भमाणा इंदाउहा णाम। एदेसिं मेह-संझा-विज्जुक्क-कणय-दिसादाह-धूमकेदु-इंदाउहाणमागारेण ते परिणमंति। ते कधं परिणमंति त्ति वुत्ते विसिट्ठागासदेसो खेत्तं। सीदुसुण(* ता प्रतौ 'सोदुसण' इति पाठः।) वरिसणेहि उवलक्खियो कालो (* अ प्रतौ 'काले' इति पाठः।) सिसिर-वसंत-णिदाह-वासारत्त-सरद-हेमंता उडू। दिणयरस्स दक्खिणुत्तरगमणमयणं। पूरण-गलणसहावा पोग्गला णाम। खेत्तं कालं उडुं(* अ आ प्रत्योः 'काल उदु' इति पाठः।) अयणं पोग्गलं च तप्पाओग्गं पप्प पाविदूण ते पोग्गला तेसिमागारेण परिणमंति, अण्णहा सव्वत्थ सव्वद्धं तेसिमुप्पत्तिप्पसंगादो। जे च अमी अण्णे च एवमादिया अंगमलप्पहुडीणि (* ता प्रतौ 'प्पहुडि(डी)णि' इति पाठः।) सरीरमलप्पहुडीणि (* ता प्रतौ 'प्पहुडीण(णि)', अ आ प्रत्योः 'प्पहुडीण' इति पाठः।) एत्थप्पहुडिसणद्दं (* अ आ प्रत्योः 'सज्जेण' इति पाठः।) सुज्जचंदग्गह-णक्खत्तुवराग-परिवेस-धव्वणयरादओ (*अ आ प्रत्योः 'गंधवण्णसदओ' इति पाठः।) घेत्तव्वा। सा सव्वोसादियविस्ससाबंधो णाम।

'से ते' अर्थात् जघन्यगुण पुद्‌गलोंके सिवा वे पुद्‌गल 'तं बंधणपरिणामं' अर्थात् बन्धके कारणभूत स्निग्ध और रूक्ष गुणरूप परिणामको प्राप्त होकर सब स्निग्ध और रूक्ष पुद्‌गल बन्धको प्राप्त होते हैं। किन्तु इतनी विशेषता है कि स्निग्ध पुद्‌गलोंका स्निग्ध पुद्‌गलोंके साथ और रूक्ष पुद्‌गलोंका रूक्ष पुद्‌गलोंके साथ बन्ध नहीं होता। किन्तु दो अविभागप्रतिच्छेद अधिक स्निग्ध पुद्‌गलोंका दो अविभागप्रतिच्छेद हीन स्निग्ध पुद्‌गलोंके साथ बन्ध होता है। तथा दो

अविभागप्रतिच्छेद अधिक रूक्ष पुद्‌गलोंका दो अविभागप्रतिच्छेद हीन रूक्ष पुद्‌गलोंके साथ बन्ध होता है। इस प्रकार बन्धको प्राप्त होकर वे पुद्‌गल परिणमन करते हैं। यथा --

वर्षा ऋतुके सिवा अन्य समयमें जो मेघ होते हैं उन्हें अभ्र कहते हैं। उन अभ्ररूपसे वे परिणत होते हैं। अथवा वर्षा ऋतुमें जो कृष्ण वर्णके बादल होते हैं वे मेघ कहलाते हैं। सूर्योदयके समय और सूर्यास्तके समय पूर्वापर दिशाओंमें जो जपा कुसुमके समय दिखायी देती है वह सन्ध्या कहलाती है। जो रक्त, धवल और श्याम वर्णकी होती है, जिसमें अत्यधिक तेज होता है, जो कुपित हुए भुजंगके समान चंचल शरीरवाली होती है और जो मेघोंमें उपलब्ध होती है वह विद्युत् कहलाती है। जो जलते हुए अग्निपिंडके समान अनेक आकारवाली होकर आकाशसे गिरती है वह उल्का कहलाती है। जिससे मनुष्य, पशु और पक्षी मर जाते हैं तथा जो वृक्ष और पर्वतोंके शिखरोंका विदारण करती है ऐसी अशनिको कनक कहते हैं। उत्पातकालमें अग्निके बिना दावानलके समान जो दशों दिशाओंमें उपलब्ध होता है उसे दिशादाह कहते हैं। उत्पातकालमेंही धूमयष्टिके समान जो आकाशमें उपलब्ध होता है उसे धूमकेतु कहते हैं। जो पाँच वर्णका होकर धनुषाकार रूपसे या त्रुटित रूपसे पूर्वापर दिशाओंमें उपलब्ध होता है उसे इन्द्रायुध कहते हैं। इन मेघ, सन्ध्या, बिजली, कनक दिशादाह, धूमकेतु और इन्द्रायुधके आकाररूपसे वे पुद्‌गल परिणत होते हैं वे किस कारणसे परिणत होते हैं, ऐसा पूछनेपर 'से खेत्तं पप्प' इत्यादि सूत्रवचन कहा है। विशिष्ट आकाशदेशका नाम क्षेत्र है। शीत, उष्ण और वर्षासे उपलक्षित समयका नाम काल है। शिशिर, वसन्त, निदाघ, वर्षा, शरद और हेमन्तका नाम ऋतु है। सूर्यका दक्षिण व उत्तरको गमन करना अयन है। जिनका पूरण और गलन स्वभाव है वे पुद्‌गल कहलाते हैं। अपने अपने योग्य क्षेत्र, काल, ऋतु, अयन और पुद्‌गलको प्राप्त होकर वे पुद्‌गल उन मेघ आदिके आकाररूपसे परिणत होते हैं; अन्यथा सर्वत्र उनकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है। जो ये और अन्य अंगमल अर्थात् शरीरमल आदि पदार्थ है यहाँ 'प्रभृति' शब्दसे सूर्य, चन्द्र, ग्रह, और नक्षत्र इनका उपराग तथा परिवेश और गन्धर्वनगर आदि लेने चाहिए। यह सब सादि विस्त्रसाबन्ध है।

विशेषार्थ -- आगमद्रव्यबन्धके सिवा शेष सब बन्ध नोआगमद्रव्यबन्ध कहलाते हैं। इसके प्रयोगबन्ध ओर विस्त्रसाबन्ध ये दो भेद हैं जिसमें जीवके व्यापारकी अपेक्षा होती है वह प्रयोगबन्ध कहलाता है और जो जीवके व्यापारके बिना अपनी योग्यतानुसार होता है वह विस्त्रसाबन्ध कहलाता है। यहाँ सादिविस्त्रसाबन्धका विचार किया जा रहा है। यह पुद्‌गलोंकी

अपनी-अपनी योग्यतानुसार होता है। यों तो जितने भी कार्य होते हैं वे सब अपनी अपनी योग्यतानुसार ही होते हैं। किन्तु बाह्य निमित्तको ध्यानमें रखकर बन्धके प्रयोगबन्ध और विस्त्रसाबन्ध ये दो भेद किये गये हैं। कर्मबन्ध प्रयोगबन्धमें आता है, पर समयप्राभृतमें इसके विषयमें लिखा है कि रागादिकका निमित्त पाकर कर्मपुद्गल स्वयं कर्मरूपसे परिणत होते हैं और कर्मका निमित्त पाकर जीव रागादिकरूपसे परिणमन करता है। समयप्राभृतके उक्त कथनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बलात् अन्य अन्यका परिणमन करानेवाला नहीं होता, किन्तु एक-दूसरेका निमित्त पाकर प्रत्येक द्रव्य स्वयं परिणमन करता है। शेष कथन सुगम है।

जो सो थप्पो पओअबंधो णाम सो दुविहो -- कम्मबंधो चेव णोकम्मबंधो चेव।।३८।।

जो प्रयोगबन्ध स्थगित कर आये हैं वह दो प्रकारका है -- कर्मबन्ध और नोकर्मबन्ध।।३८।।

एवं दुविहो चेव पओअबंधो होदि, अण्णस्स अणुवलंभादो। को पओअबंधो णाम? जीववारेण जो समुप्पण्णो बंधो से पओअबंधो णाम।

इस तरह दो प्रकारका ही प्रयोगबन्ध होता है, क्योंकि, अन्य प्रकारका प्रयोगबन्ध उपलब्ध नहीं होता।

शंका -- प्रयोगबन्ध किसे कहते हैं।

समाधान -- जीवके व्यापार द्वारा जो बन्ध समुत्पन्न होता है उसे प्रयोगबन्ध कहते हैं।

जो कम्मबंधो णाम सो थप्पो।।३९।।

जो कर्मबन्ध है उसे स्थगित करते हैं।।३९।।

कुदो? बहुवण्णणिज्जत्तादो (* ता आ प्रत्योः '-- णिज्जित्तादो' इति पाठः।)।

क्योंकि, उसका आगे बहुत वर्णन करना है।

जो सो णोकम्मबंधो णाम सो पंचविहो -- आलावणबंधो अल्लीवणबंधो संसिलेसबंधो सरीरबंधो सरीरिबंधो चेदि।।४०।।

जो नोकर्मबन्ध है वह पाँच प्रकारका है -- आलापनबन्ध, अल्लीवनबन्ध, संश्लेषबन्ध, शरीरबन्ध और शरीरिबन्ध।।४०।।

एवं णोकम्मबंधो पंचविहो चेव; अण्णस्स अणुवलंभादो। तत्थ आलावणबंधो णाम केरिसो त्ति वुत्ते वुच्चदे -- रज्जु-वरत्त-कट्ठदव्वादीहि जं पुधभूदाणं दव्वाणं बंधणं सो आलावणबंधो णाम। लेवणविसेसेण जडिदाणं (* ता प्रतौ '(लेव)ण विसेसेण जदिदाणं', आ का ता प्रतिषु

'लोयणविसेसेण जदिदाणं' इति पाठः।) दव्वाणं जो बंधो सो अल्लीवणबंधो णाम। रज्जु-वरत्त-कट्ठादीहि विणा अल्लीवण (* अ आ प्रत्योः 'अल्लियणं' इति पाठः।) विसेसेहि विणा जो चिक्कण-अचिक्कणदव्वाणं चिक्कणदव्वाणं वा परोप्परेण बंधो सो संसिलेसबंधो णाम। पंचण्णं सरीराणमण्णोण्णेण बंधो सो सरीरबंधो णाम। जीवपदेसाणं जीवपदेसेहि पंचसरीरेहि य जो बंधो सो सरीरिबंधो णाम। संपहि आलावणबंधसरूवपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

इस प्रकार नोकर्मबन्ध पाँच प्रकारका ही होता है, क्योंकि, इनके सिवा अन्य बन्ध उपलब्ध नहीं होता। उनमेंसे आलापनबन्धका क्या स्वरूप है, ऐसा पूछनेपर कहते हैं -- रस्सी, वरत्रा (रस्सीविशेष) और काष्टद्रव्य आदिकसे जो पृथग्भूत द्रव्य बाँधे जाते हैं वह आलापनबन्ध है।

लेपविशेषसे परस्पर सम्बन्धको प्राप्त हुए द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह अल्लीवनबन्ध कहलाता है। रस्सी, वरत्रा और काष्ठ आदिकके बिना तथा अल्लीवनविशेषके विना जो चिक्कण और अचिक्कण द्रव्योंका अथवा चिक्कण द्रव्योंका परस्पर बन्ध होता है वह संश्लेषबन्ध कहलाता है। पाँच शरीरोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह शरीरबन्ध होता है। तथा जीवप्रदेशोंका जीवप्रदेशोंके साथ और पाँच शरीरोंके साथ जो बन्ध होता है वह शरीरिबन्ध कहलाता है। अब आलापनबन्धके स्वरूपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

जो सो आलावणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- से सगडाणं (* अ आ प्रत्योः 'सदाणं' इति पाठः।) वा जाणाणं वा जुगाणं वा गड्डीणं (* अ आ प्रत्योः 'गदीणं' इति पाठः।) वा गिल्लीणं वा रहाणं वा संदणाणं वा सिवियाणं वा गिहाणं वा पासादाणं वा गोवुराणं वा तोरणाणं वा से कट्टेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा वब्भेण वा दब्भेण वा जे चामण्णे एवमादिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि आलावियाणं बंधो होदि सो सव्वो आलावणबंधो णाम।।४१।।

जो आलापनबन्ध है उसका यह निर्देश है -- जो शकटोंका, यानोंका, युगोंका, गड्डियोंका, गिल्लियोंका, रथोंका, स्यन्दनोंका, शिविकाओंका, गृहोंका, प्रासादोंका, गोपुरोंका और तोरणोंका काष्ठसे, लोहसे, रस्सीसे, चमड़ेकी रस्सीसे और दर्भसे जो बन्ध होता है तथा इनसे लेकर अन्य द्रव्योंसे आलापित अन्य द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह सब आलापन बन्ध है।।४१।।

एदस्सत्थो वुच्चदे। तं जहा -- लोहेण बद्धणेमि-तुंब-महाचक्का लोहबद्धछहयपेरंता लोणादीणं (* अ आ प्रत्योः 'लोगादीणं' इति पाठः।) गरुअभरुव्वहणक्खमा सयडा णाम। समुद्दमज्झे विविहभंडेहि आवूरिदा संता जे गमणक्खमा वोहित्ता (* ता अ आ प्रतिषु 'वोहित्था'

इति पाठः।) ते जाणा णाम। गरुवत्तणेण महल्लत्तणेण (* ता अ आ प्रतिषु 'गरुवत्थणेण महल्लत्थणेण' इति पाठः।) य जं तुरय-वेसरादीहि वुब्भदि (*अ प्रतौ 'वुच्चदि', ता प्रतौ 'बज्झदि' इति पाठः।) तं जुगं णाम। दहरदोचक्काओ धण्णादिहलुअ (*ता अ आ प्रतिषु '- हलुह' इति पाठः।) दव्वभरुव्वहणक्खमाओ गड्डीओ णाम। फिरिक्कीओ गिल्लीयो णाम। का फिरिक्की णाम? चुंदेण वट्टुलागारेण घडिदणेमितुंबाधारसरलट्ठकट्टा (* ता प्रतौ '-- कट्टा (९)' इति पाठः।) फिरिक्की णाम। जुद्धे अहिरह-महारहाणं चडणजोग्गा रहा णाम। चक्कवट्टि-बलदेवाणं चडणजोग्गा सव्वावुहाउण्णा णिमणपवणवेगा अच्छे भंगे वि चक्कघडणगुणेण अपडिहयगमणा संदणा णाम। माणुसेहि वुब्भमाणा (* आ प्रतौ 'वुज्झमाणा' इति पाठः।) सिविया णाम। कट्टियाहि बद्धकुड्डा उवरि वंसिकच्छण्णा गिहा णाम। पक्कसइला सइला आवासा पासादा णाम। पायाराणं वारे घडिदगिहा गोवुरं णाम। पुराणं पुराणं पासादाणं वंदणमालबंधणट्ठं पुरदो ट्ठविदरुक्खविसेसा तोरणं णाम। एदेसिं पुव्वुत्ताणं जे बंधा ते आलावणबंधा णाम। केणेसिं बंधो होदि? कट्टेण वा लोहेण वा रज्जुणा वा वब्भेण वा दब्भेण वा। 'वा' सद्देण (* अ आ प्रत्योः 'दव्वेण वा सद्देण' इति पाठः।) वक्केण वा सुंबेण (* ता अ आ प्रतिषु 'सुंभेण' इति पाठः।) वा कट्टियाए वा इच्चेवमादि घेत्तव्वं। कट्टादीहि अण्णदव्वेहि अण्णदव्वाणं आलाविदाणं जोइदाणं (* प्रतिषु 'दोहदाणं' इति पाठः।) बंधो होदि सो सव्वो आलावणबंधो णाम।

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। यथा -- जिनकी धुर, गाड़ीकी नाभि और महाचक्र लोहसे बंधे हुए हैं, जिनके छुहयपर्यन्त लोहसे बँधे हुए हैं और जो नमक आदि भारी भारको ढोनेमें समर्थ हैं वे शकट कहलाते हैं। नाना प्रकारके भाण्डोंसे आपूरित होकर भी समुद्रमें गमन करनेमें समर्थ जो जहाज होते हैं वे यान कहलाते हैं। जो बहुत भारी होनेसे और बहुत बड़े होनेसे घोड़ा और खच्चर आदिके द्वारा ढोया जाता है वह युग कहलाता है। जिनके दो चक्के छोटे हैं और जो धान्य आदि हलके भारके ढोनेमें समर्थ हैं वे गड्डी कहलाती हैं। फिरिक्कीके गिल्ली कहते हैं।

शंका -- फिरिक्की किसे कहते हैं?

समाधान -- जिसकी नेमि और तुम्बकी आधारभूत आठ लकड़ियाँ वर्तुलाकार चुन्दसे घटित है उसे फिरिक्की कहते हैं।

जो युद्धमें अधिरथी और महारथियोंके चढ़नेयोग्य होते हैं वे रथ कहलाते हैं। जो चक्रवर्ती और बलदेवोंके चढ़नेयोग्य होते हैं, जो सब आयुधोंसे परिपूर्ण होते हैं, जो पवनके

समान वेगवाले होते हैं और धुरके टूट जानेपर भी जिनके चक्रोंकी इस प्रकारकी रचना होती है, जिस गुणके कारण जिनके गमनागमनमें बाधा नहीं पड़ती वे स्यन्दन कहलाते हैं। जो मनुष्यों द्वारा उठाकर ले जायी जाती है वे शिविका कहलाती हैं। जिनकी भीत लकड़ियोंसे बनायी जाती है और जिनका छप्पर बाँस और तृणसे छाया जाता है वे गृह कहलाते हैं। ईंटों और पत्थरोंके बने हुए पत्थरबहुल आवासोंको प्रासाद कहते हैं। कोटोंके दरवाजोंपर जो घर बने होते हैं वे गोपुर कहलाते हैं। प्रत्येक पुर और प्रासादोंपर वन्दनमाला बाँधनेके लिए आगे जो वृक्षविशेष रखे जाते हैं वे तोरण कहलाते हैं। इन पूर्वोक्त शकट आदिके साथ जो बन्ध होते हैं वे आलापनबन्ध कहलाते हैं।

शंका -- इनका बन्धन किस पदार्थसे होता है?

समाधान -- काष्ठसे, लोहसे, रस्सीसे, वर्ध्रसे और दर्भसे होता है। यहाँ सूत्रमें आये हुए 'वा' शब्दसे बकलेसे, शुम्ब अर्थात् तृणविशेषसे और लकड़ीसे होता है, इत्यादि लेना चाहिए।

काष्ठ आदि अन्य द्रव्योंसे जो आलापित अर्थात् परस्पर सम्बन्धको प्राप्त हुए अन्य द्रव्योंका बन्ध होता है वह सब आलापनबन्ध है।

जो सो अल्लीवणबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- से कडयाणं वा कुड्डाणं वा (* अ आ प्रत्योः 'कटयाणं वा कूटाणं वा' इति पाठः।) गोवरपीडाणं वा पागाराणं वा साडियाणं (* ता आ प्रत्योः 'पासादियाणं', अ प्रतौ 'सादियाणं' इति पाठः।) वा जे चामण्णे एवमादिया अण्णदव्वाणमण्णदव्वेहि अल्लीविदाणं बंधो होदि सो सव्वो अल्लीवणबंधो णाम।।४२।।

जो अल्लीवणबन्ध है उसका यह निर्देश है -- कटकोंका, कुड्डोंका, गोवरपीड़ोंका, प्राकारोंका और शाटिकाओंका तथा इनसे लेकर और जो दूसरे पदार्थ हैं उनका जो बन्ध होता है अर्थात् अन्य द्रव्योंसे सम्बन्धको प्राप्त हुए अन्य द्रव्योंका जो बन्ध होता है वह अल्लीवणबन्ध है।।४२।।

बंसकंबीहि अण्णोण्णज(*अ आ प्रत्योः 'जदणाए' इति पाठः।)णणाए जे किज्जंति घरावणादिवाराणं ढंकणट्ठं (*ता प्रतौ 'दं(ढं)क्कणट्ठं', अ आ प्रत्योः 'दंकणट्ठं' इति पाठः।) ते कडया (* अ आ प्रत्योः 'कदया' इति पाठः।) णाम। जिणहरघरायदणाणं (* ता प्रतौ 'जिणहरघरायणाणं', अ प्रतौ 'जिणाहरघरावणाणं', आ प्रतौ 'जिणहरघरावणाणं' इति पाठः।) ठविदओलित्तीओ कुड्डा णाम। कुड्डाणं पोग्गलबंधो अल्लीवणबंधो णाम, बब्भ-दब्भ-लोह-कट्ठ-

रज्जूणं बंधेण विणा अल्लियणमेत्तेणेव बंधुवलंभादो ण च एसो बंधो संसिलेसबंधे पविसदि, ओल्लमट्टियाए चिक्कणगुणाभावादो। छाणेण लेविदूण जाणि पीडाणि किज्जंति ताणि गोवरपीडाणि (* अ आ प्रत्योः 'पीदाणि' इति पाठः।) णाम। एदेसिं जो बंधो सो वि अल्लीवणबंधो णाम, सगदेहादो पुधभूददब्भादिबंधकारणाभावादो। जिणहरादीणं रक्खट्ठं प्पासेसु ट्ठविदओलित्तीओ (* ता अ आ प्रतिषु 'ओतित्तीओ' इति पाठः।) पागार णाम। पक्किट्टाहि (* ता प्रतौ 'पक्किट्टाहि' इति पाठः।) घडिदवरंडा वा पागार णाम। तत्थ वि इट्टाहिंतो (* ता प्रतौ 'इट्टाहिंती' इति पाठः।) पुधभूदबंधकारणाणुवलंभादो (* ता अ आ प्रतिषु 'कारणमुवलंभादो' इति पाठः।)। पुव्वं पासादगोवुरादीणं पक्किट्टा (* ता प्रतौ 'पक्किट्टा' इति पाठः।) विणिम्मियाणमालावणबंधो होदि त्ति परूविदं। संपहि तेसिं चेव अल्लीवणबंधपरूवणं कधं ण विरुज्झदे? ण, पासादगोवुर रुक्खाणमइयवडादीणं(?) लोहेण लोह-कट्ठकीलेहि य बंधं दट्ठूण तेसिमालावणबंधपरूवणादो। तत्थ वि कुड्डाणं पुण अल्लीवणबंधो चेव। बहुलियाहि(* ता आ प्रत्योः 'बुहेलियाहि' इति पाठः। अ आ प्रत्योः 'महेलियहि' इति पाठः।) परियत्तविसए परिहिज्जमाणाओ साडियाओ (* अ आ प्रत्योः 'सादियाओ' इति पाठः।) णाम। तासिं जो तंतुसंताणबंधो सो अल्लीवणबंधो णाम, तंतूहिंतो पुधभूदबंधकारणाणुवलंभादो। अण्णे एवमादिया त्ति वयणेण णेत्तपट्ट-कप्पाससुत्तविसेसेण वुअ(* अ आ प्रत्योः 'वुडवत्थाणं' इति पाठः।)वत्थाणं गहणं कायव्वं। सेसं सुगमं।

बाँसकी कमचियोंके द्वारा परस्पर बुनकर घर और अवन आदिके ढाँकनेके लिए जो बनायी जाती हैं वे कटक अर्थात् चटाई कहलाती हैं। जिनगृह, घर और अवनकी जो भीतें बनायी जाती हैं उन्हें कुड्ड कहते हैं। कुड्डोंका जो पुद्गलबन्ध होता है वह अल्लीवणबन्ध कहलाता है, क्योंकि, वर्ध्र, दर्भ, लोह, काष्ठ और रस्सीके बन्धके बिना परस्पर मिलानेमात्रसे यह बन्ध उपलब्ध होता है। यह बन्ध संश्लेषबन्धमें अन्तर्भूत होता है, यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, गीली मिट्टीमें चिक्कण गुणका अभाव है। गोबरसे लेपकर जो पीड़ बनाये जाते हैं वे गोवरपीड़ कहलाते हैं। इनका जो बन्ध होता है वह भी अल्लीवणबन्ध होता है, क्योंकि, इनके बन्धमें अपनेसे भिन्न दर्भादि बन्धके कारण नहीं उपलब्ध होते। जिनगृह आदिकी रक्षाके लिए पार्श्वमें जो भीतें बनायी जाती हैं वे प्राकार कहलाते हैं अथवा पकी हुई ईंटोंसे जो वरण्डा बनाये जाते हैं वे प्राकार बनाये जाते हैं। यहाँपर भी ईंटोंसे पृथग्भूत बन्धके कारण नहीं पाये जाते।

शंका -- पहले पकी हुई ईंटोंसे बने हुए प्रासाद और गोपुर आदिका आलापनबन्ध होता है ऐसा कह आये हैं और अब यहाँ उनको ही अल्लीवणबन्ध कह रहे हैं, सो यह कथन विरोधको कैसे नहीं प्राप्त होता?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, पहले प्रासाद, गोपुर आदिकका लोहेसे तथा लोह और काष्ठकी कीलोंसे बन्ध देखकर उनका आलापनबन्ध कहा है। परन्तु उनकी भीतोंका तो अल्लीवणबन्ध ही होता है, इसलिए उक्त कथनमें कोई विरोध नहीं है।

स्त्रियोंके द्वारा जो पहिनी जाती हैं वे शाटिका कहलाती हैं। तथा इनका जो तन्तु सन्तानबन्ध होता है वह अल्लीवणबन्ध है, क्योंकि, इनमें तन्तुओंके सिवा अलगसे बन्धके कारण उपलब्ध नहीं होते। 'अण्णे एवमादिया' इस वचनसे नेत्रपट्ट और कपासके सूतसे बुने हुए वस्त्रोंका ग्रहण करना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

जो सो संसिलेसबंधो णाम तस्स इमो णिद्देसो -- जहा कट्ठ-जदूणं अण्णोण्णसंसिलेसिदाणं बंधो संभवदि सो सव्वो संसिलेसबंधो णाम।।४३।।

जो संश्लेषबन्ध है उसका यह निर्देश है -- जैसे परस्पर संश्लेषको प्राप्त हुए काष्ठ और लाखका बन्ध होता है वह सब संश्लेषबन्ध है।।४३।।

जदू णाम लक्खा। लक्खाए कट्ठस्स च जो अण्णोण्णसंसिलेसेण बंधो सो संसिलेसबंधो णाम। ण च एस बंधो अल्लीवणबंधे पविसदि, पाणिएण जणिदद्दववाभावादो। णालावणबंधे पविसदि; तदो पुधभूददव्वादिबंधकारणाभावादो। जदुग्गहणमेदमुवलक्खणं वज्जलेव-मयणादीणं, चिक्कणदव्वाणं तेण तेसिं पि एत्थ गहणं कायव्वं।

जतु लाखको कहते हैं। लाख और काष्ठके परस्पर संश्लेषसे जो बन्ध होता है वह संश्लेषबन्ध है। यह बन्ध अल्लीवणबन्धमें अन्तर्भूत नहीं होता, क्योंकि, यहाँ पानीसे संयोगको प्राप्त हुए द्रव्यका अभाव है। आलापनबन्धमें भी अन्तर्भूत नहीं होता, क्योंकि, इनसे पृथग्भूत द्रव्यादि बन्धके कारण नहीं पाये जाते।

'जतु' पदका ग्रहण यहाँ वज्रलेप और मैन आदि चिक्कण द्रव्योंका उपलक्षण है। इससे यहाँ भी यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

जो सो सरीरबंधो णाम सो पंचविहो -- ओरालियसरीरबंधो वेउव्वियसरीरबंधो आहारसरीरबंधो तेयासरीरबंधो कम्मइयसरीरबंधो चेदि।।४४।।

जो शरीरबंध है वह पाँच प्रकारका है -- औदारिकशरीरबन्ध, वैक्रियिकशरीरबन्ध, आहारकशरीरबन्ध , तैजसशरीरबन्ध और कार्मणशरीरबन्ध ।

एवं पंचविहो चेव सरीरबंधो होदि। अण्णस्स एदेहिंतो पुधभूदबंधस्स अणुवलंभादो। संपहि एगादिसंजोगे (* अ प्रतौ 'संजोगो' इति पाठः।) ओरालियसरीरस्स बंधवियप्पुपायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

इस प्रकार पाँच प्रकारका ही शरीरबन्ध होता है, क्योंकि, इनसे पृथग्भूत दूसरा शरीरबन्ध नहीं उपलब्ध होता।

ओरालिय-ओरालियसरीरबंधो।।४५।।

औदारिक-औदारिकशरीरबन्ध।।४५।।

ओरालियसरीरणोकम्मखंधाणमण्णेहि ओरालियसरीरणोकम्मखंधेहि सो बंधो सो ओरालियसरीबंधो। एवमेसो एगसंजोगेण एक्को चेव भंगो होदि ।१। संपहि दुसंजोगभंगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

औदारिकशरीर नोकर्मस्कन्धोंका औदारिकशरीर नोकर्मस्कन्धोंके साथ जो बन्ध होता है वह औदारिक-औदारिकशरीरबन्ध है। इस प्रकार यह एकसयोगसे एक ही भंग होता है। अब द्विसंयोग भंगका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

ओरालिय-तेयासरीरबंधो।।४६।।

औदारिक-तैजसशरीरबन्ध।।४६।।

ओरालियसरीरपोग्गलाणं तेयासरीरपोग्गलाणं च एक्कम्हि जीवे जो परोप्परेण बंधो सो ओरालिय तेयासरीरबंधो णाम १।

औदारिक शरीरके पुद्गलोंका और तैजस शरीरके पुद्गलोंका एक जीवमें जो परस्परबन्ध होता है वह औदारिक-तैजसशरीरबन्ध है १।

ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो।।४७।।

औदारिक-कार्मणशरीरबंध।।४७।।

ओरालियखंधाणं कम्मइयखंधाणं च एक्कम्हि जीवे ट्ठिदाणं जो बंधो सो ओरालिय-कम्मइयसरीरबंधो णाम २। ओरालियखंधाणं वेउव्विय-आहारसरीरेहि सह णत्थि बंधो; ओरालियसरीरेण परिणदजीवे सेसदोण्णं सरीराणमभावादो। होदु णाम वेउव्वियसरीरस्स अभावो, तस्स देव-णेरइएसु चेव अत्थित्थदंसणादो आहारसरीरं (* अ आ प्रत्योः '-- सरीराणं'

इति पाठः।) पुण मणुस्सेसु चेव होदि, तेण ओरालियसरीरेण सह आहारसरीरस्स संबंधेण होदव्वमिदि? ण, आहारसरीरेण परिणमंताणं ओरालियसरीरस्स उदयाभावेण तेण संबंधाभावादो। एवं दुसंजोगपरूवणा कदा। संपहि तिसंजोगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

एक जीवमें स्थित औदारिकस्कन्धोंका और कार्मणस्कन्धोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह औदारिक-कार्मणशरीरबन्ध है २। औदारिकस्कन्धोंका वैक्रियिक और आहारक शरीरके साथ बन्ध नहीं होता, क्योंकि, औदारिक शरीररूपसे परिणत हुए जीवमें शेष दो शरीरोंका अभाव पाया जाता है।

शंका -- इसके वैक्रियिक शरीरका अभाव भले ही रहा आवे, क्योंकि, उसका देव और नारकियोंके ही अस्तित्व देखा जाता है, किन्तु आहारक शरीर तो मनुष्योंके ही होता है, इसलिए औदारिक शरीरके साथ आहारक शरीरका सम्बन्ध होना चाहिए?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, आहारक शरीरस्वरूपसे परिणमन करनेवाले जीवोंके औदारिक शरीरका उदय नहीं होनेसे उसके साथ सम्बन्ध नहीं होता।

इस प्रकार द्विसंयोगी भंगका कथन किया। अब त्रिसंयोगी भंगका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो।।४८।।

औदारिक-तैजस-कार्मणशरीरबन्ध।।४८।।

ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधाणं एक्कम्हि जीवे णिविट्ठाणं जो अण्णोण्णेण बंधो सो ओरालिय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो णाम। एवं तिसंजोगे एक्को चेव भंगो १। संपहि वेउव्वियसरीरस्स एगादिसंजोगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

एक जीवमें निविष्ट हुए औदारिक शरीर, तैजस शरीर और कार्मण शरीरके स्कन्धोंका जो परस्पर बन्ध होता है वह औदारिक-तैजस-कार्मण शरीरबन्ध है। इस प्रकार त्रिसंयोगी एक ही भंग होता है। अब वैक्रियिक शरीरके एकादिसंयोगी भंगोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

वेउव्विय-वेउव्वियसरीरबंधो।।४९।।

वैक्रियिक-वैक्रियिकशरीरबन्ध।।४९।।

वेउव्विय-तेयासरीरबंधो।।५०।।

वैक्रियिक-तैजस शरीरबन्ध।।५०।।

वेउव्विय-कम्मइयसरीरबंधो।।५१।।

वैक्रियिक-कार्मण शरीरबन्ध।।५१।।

वेउव्विय-तेया-कम्मइयसरीरबंधो।।५२।।

वैक्रियिक-तैजस-कार्मण शरीरबन्ध।।५२।।

एदाणि चत्तारि वि सुत्ताणि सुगमाणि। आहारसरीरभंगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

ये चारों ही सूत्र सुगम हैं। अब आहारक शरीरके भंगोंका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

आहार-आहारसरीरबंधो।।५३।।

आहारक-आहारक शरीरबन्ध।।५३।।

आहार-तेयासरीरबंधो।।५४।।

आहारक-तैजस शरीरबन्ध।।५४।।

आहार-कम्मइयसरीरबंधो।।५५।।

आहारक-कार्मण शरीरबन्ध।।५५।।

आहार-तेया कम्मइयसरीरबंधो।।५६।।

आहारक-तैजस-कार्मण शरीरबन्ध।।५६।।

एदाणि चत्तारि वि सुत्ताणि सुगमाणि (* अ प्रतौ 'एदाणिं चत्तारि सुत्ताणि वि सुगमाणि', आ प्रतौ 'एदाणि वि सुत्ताणि सुगमाणि' इति पाठः।)।

ये चार सूत्र भी सुगम हैं।

तेया-तेयासरीरबंधो।।५७।।

तैजस-तैजस शरीरबन्ध।।५७।।

तेया-कम्मइयसरीरबंधो।।५८।।

तैजस-कार्मण शरीरबन्ध।।५८।।

सेसभंगा एत्थ किण्ण परूविदा? ण, पुणरुत्तदोसप्पसंगादो।

शंका -- शेष भंग यहाँ क्यों नहीं कहे?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, पुनरुक्त दोषका प्रसंग प्राप्त होता है।

कम्मइय-कम्मइयसरीरबंधो।।५९।।

कार्मण-कार्मण शरीरबन्ध।।५९।।

एत्थ एक्को चेव भंगो। सेसा भंगा संता वि किमट्ठं ण परूविदा? पुव्वं परूविदत्तादो।

यहाँ एक ही भंग होता है।

शंका -- शेष भंग भी होते हैं, फिर वे किसलिए नहीं कहे?

समाधान -- क्योंकि, उनका कथन पहले कर आये हैं।

(* प्रतिषु धवलान्तर्गतमिदं न सूत्रत्वेनोपलभ्यते।) सो सव्वो सरीरबंधो णाम।।६०।।

वह सब शरीरबन्ध है।।६०।।

एसो पण्णारसविहो बंधो सरीरबंधो त्ति घेत्तव्वो।

यह पन्द्रह प्रकारका बन्ध शरीरबन्ध है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

जो सो सरीरिबंधो णाम सो दुविहो -- सादियसरीरिबंधो चेव अणादियसरीरिबंधो चेव।।६१।।

जो शरीरिबन्ध है वह दो प्रकारका है -- सादि शरीरबन्ध और अनादि शरीरबन्ध।।६१।।

एवं दुविहो चेव सरीरिबंधो होदि; अण्णस्सासंभवादो।

इस प्रकार शरीरिबन्ध दो प्रकारका ही होता है, क्योंकि, अन्य प्रकारके शरीरिबन्धका होना असम्भव है।

जो सो सादियसरीरिबंधो णाम सो जहा सरीरबंधो तहा णेदव्वा।।६२।।

जो सादि शरीरिबन्ध है वह शरीरबन्धके समान जानना चाहिए।।६२।।

सरीरी णाम जीवो। तस्स जो बंधो ओरालियादिसरीरेहि सो सरीरिबंधो णाम। तस्स भंगपरूवणा जहा सरीरबंधस्स परूविदा तहा परूवेदव्वा। तं जहा -- ओरालियसरीरेण सरीरिस्स बंधो। वेउव्वियसरीरेण सरीरिस्स बंधो। आहारसरीरेण सरीरिस्स बंधो। तेजइयसरीरेण सरीरिस्स बंधो। कम्मइयसरीरेण सरीरिस्स बंधो। सरीरिणा सरीरस्स बंधो। कधमेसो छट्ठभंगो जुज्जदे? ण, कम्मणोकम्माणमणादिसंबंधेण मुत्तत्तमुवगयस्स जीवस्स घणलोगमेत्तपदेसस्स जोगवसेण संघार-विसप्पणधम्मियस्स अवयवाणं परतंतलक्खणसंबंधेण छट्ठभंगुप्पत्तीए विरोहाभावादो। एवमेदे छब्भंगा ६। ओरालिय-तेजासरीरेहि सरीरिस्स बंधो ओरालिय-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स भंगो, ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो, एवमोरालियसरीरेहि णिरुद्धे तिण्णि भंगा ३। वेउव्विय-आहारसरीराणं एवं चेव तिण्णि तिण्णि भंगा परूवेदव्वा। तेजा-कम्मइयसरीरेहि सरीरिस्स बंधो १। एवं तेयासरीरे णिरुद्धे (* ता आ

प्रत्योः 'तेयासरीरणिरुद्धे' इति पाठः।) एक्को चेव दुसंजोगभंगो। कम्मइयम्मि दुसंजोगभंगो णत्थि। एवमेदे सोलस सरीरिबंधा १६।

शरीरी जीवको कहते हैं। उसका जो औदारिक आदि शरीरके साथ बन्ध होता है वह शरीरिबन्ध है। इसके भंगोंका कथन, जिस प्रकार शरीरबन्धके भंगोंका कथन किया है उस प्रकार करना चाहिए। यथा -- औदारिक शरीरके साथ शरीरीका बन्ध, वैक्रियिक शरीरके साथ शरीरीका बन्ध, आहारक शरीरके साथ शरीरीका बन्ध, तैजस शरीरके साथ शरीरीका बन्ध, कार्मण शरीरके साथ शरीरीका बन्ध और शरीरीके साथ शरीरका बन्ध ।

शंका -- यहाँ छठवाँ भाग कैसे बनता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, जो कर्म और नोकर्मोंका अनादि सम्बन्ध होनेसे मूर्तपनेको प्राप्त हुआ है और जिसके घनलोकप्रमाण जीवप्रदेश योगके वशसे संकोच और विस्तार धर्मवाले हैं ऐसे जीवके अवयवोंके परतन्त्रलक्षण सम्बन्धसे छठे भंगकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता।इस प्रकार ये छह भंग हुए।

औदारिक-तैजस शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध. औदारिक-कार्मण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध और औदारिक-तैजस-कार्मण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध; इस प्रकार औदारिक शरीरकी विवक्षा होनेपर तीन भंग होते हैं ३। वैक्रियिक और आहारक शरीरोंके इसी प्रकार तीन तीन भंग कहने चाहिए। तैजस-कार्मण शरीरोंके साथ शरीरीका बन्ध, इस प्रकार तैजस शरीरकी विवक्षा होनेपर द्विसंयोगी एक ही भंग होता है १। कार्मण शरीरमें द्विसंयोगी भंग नहीं होता। इस प्रकार ये सोलह शरीरिभंग होते हैं १६।

जो अणादियसरीरिबंधो णाम अट्ठण्णं जीवपदेसाणं अण्णोण्णपदेसबंधो भवदि सो सव्वो अणादियसरीरिबंधो णाम।।६३।।

जो अनादिशरीरिबन्ध। यथा -- जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका परस्पर प्रदेशबन्ध होता है यह सब अनादि शरीरिबन्ध है।।६३।।

जीवमज्झपदेसाणमट्ठण्णं पि जो बंधो सो अणादियसरीरिबंधो होदि (* आ प्रतौ 'होज्ज' इति पाठः।) किंतु एसो ण पओअबंधो; साभावियत्तादो त्ति वुत्ते -- ण एस दोसो; दिट्ठंतदुवारेण णिद्दिट्ठत्तादो। जहा अट्ठण्णं पि जीवमज्झपदेसाणमणादियो बंधो तहा सरीरिस्स जो पुव्वरहिदबंधो सो अणादियसरीरिबंधो त्ति घेत्तव्वो। को सो बंधो? सरीरिस्स णोकम्मसामण्णेण जो बंधो सो अणादियसरीरिबंधो णाम।

शंका -- जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका जो बन्ध है वह अनादिशरीरिबन्ध है, यह ठीक है; किन्तु यह प्रयोगबन्ध नहीं है, क्योंकि, यह स्वाभाविक होता है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है; क्योंकि, दृष्टान्त द्वारा अनादि शरीरिबन्धका यहाँ निर्देश किया है। जिस प्रकार जीवके आठ मध्यप्रदेशोंका अनादिबन्ध होता है उसी प्रकार शरीरका जो पूर्वकालकी मर्यादासे रहित बन्ध है वह अनादि शरीरिबन्ध है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शंका -- वह बन्ध क्या है?

समाधान -- शरीरीका कर्म और नोकर्म सामान्यके साथ जो बन्ध है वह अनादि शरीरिबन्ध है।

जो सो थप्पो कम्मबंधो णाम यथा कम्मे त्ति तहा णेदव्वं।।६४।।

जो कर्मबन्ध स्थगित कर आये हैं उसे कर्मअनुयोगद्वारके समान जानना चाहिए।।६४।।

कम्मबंधस्स चउसट्ठिभंगा जहा कम्माणुयोगद्दारे परूविदा तहा तहा परूवेदव्वा।

कर्मबन्धके चौंसठ भंग जिस प्रकार कर्मानुयोगद्वारमें कहे हैं उसी प्रकार कहने चाहिए।

एवं संखेवेण परूविदूण बंधो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

इस प्रकार संक्षेपसे कथन करनेपर बन्ध अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

बंधगाणुयोगद्दारं

जे ते बंधगा णाम तेसिमिमो णिद्देसो -- गदि इंदिए काए जोगे वेदे कसाए णाणे संजमे दंसणे (* आ प्रतौ 'दंसणेसु' इति पाठः।) लेस्सा भविय सम्मत्त सण्णि आहारे चेदि।।६५।।

जो बन्धक हैं उनका यह निर्देश है -- गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञी और आहार।।६५।।

एदं सुत्तं चोद्दसमग्गणट्ठाणाणि परूवेदि, अण्णहा बंधगपपरूवणाणुववत्तीदो। एदेसिं मग्गणट्ठाणाणं जहा खुद्दाबंधे परूवणा कदा तहा कायव्वा।

यह सूत्र चौदह मार्गणास्थानोंका प्ररूपण करता है, अन्यथा बन्धकका कथन नहीं बन सकता। इन मार्गणास्थानोंका जिस प्रकार क्षुल्लकबन्धमें कथन किया है उसी प्रकार करना चाहिए।

गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया (* ता प्रतौ 'णेरया' इति पाठः।) बंधा तिरिक्खा बंधा देवा बंधा मणुसा बंधा वि अत्थि अबंधा वि अत्थि सिद्धा अबंधा (* अ आ प्रत्योः 'अबंधा ।।२।।' इति पाठः।)। एवं खुद्दाबंधएक्कारसअणुयोगद्दारं णेयव्वं।।६६।।

गति मार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारक जीव बन्धक हैं, तिर्यंच बन्धक हैं, देव बन्धक हैं, मनुष्य बन्धक भी हैं और अबन्धक भी हैं, सिद्ध अबन्धक हैं। इस प्रकार यहाँ क्षुल्लकबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वार जानने चाहिए।।६६।।

एत्थ उद्देसे खुद्दाबंधस्स एक्कारसअणुयोगद्दाराणं परूवणा कायव्वा, अम्हेहि (* आ प्रतौ 'अहेहि' इति पाठः।) पुण गंथबहुत्तभएण ण कदा।

इस स्थानपर क्षुल्लकबन्धके ग्यारह अनुयोगद्वारोंका कथन करना चाहिए। हमने ग्रन्थके बढ़ जानेके भयसे उनका कथन यहाँ नहीं किया है।

एवं महादंडया णेयव्वा।।६७।।

इसी प्रकार महादण्डक जानने चाहिए।।६७।।

एक्कारसअणुयोगद्दाराणं परूवणं कादूण पुणो महादंडयाणं पि परूवणा कायव्वा।

ग्यारह अनुयोगद्वारोंका कथन करके अनन्तर महादण्डकोंका भी कथन करना चाहिए।

विशेषार्थ -- यहाँ बन्धकका कथन करना है। पहले यह कथन क्षुल्लकबन्धमें कर आये हैं, इसलिए यहाँ उसके अनुसार ही इस कथनके करनेकी सूचना की है। क्षुल्लकबन्धमें सर्वप्रथम 'बन्धक' के कथनकी प्रतिज्ञा की है। अनन्तर चौदह मार्गणाओंका नामनिर्देश करके उनमेंसे प्रत्येक मार्गणामें कौन बन्धक है और कौन अबन्धक है यह बतलाया है। अनन्तर एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व आदि ग्यारह अनुयोगोंके द्वारा बन्धकका कथन करके अन्तमें महादण्डक दिये हैं। यहाँ भी इसी प्रकार कथन करनेसे बन्धक अनुयोगद्वार समाप्त होता है यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

इस प्रकार बन्धक यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

बंधणिज्जाणुयोगद्दारं

जं तं बंधणिज्जं णाम तस्स इममणुगमणं कस्सामो -- वेदणअप्पा पोग्गला, पोग्गला खंधसमुद्दिट्ठा (* अ प्रतौ 'समुट्ठिदा' इति पाठः।), खंधा वग्गणसमुद्दिट्ठा (* अ प्रतौ 'समुट्ठिदा' इति पाठः।) ।।६८।।

जो बंधनीय है उसका इस प्रकारसे अनुगमन करते हैं -- वेदनस्वरूप पुद्गल है, पुद्गल स्कन्धस्वरूप है, और स्कन्ध वर्गणास्वरूप हैं।।१।।

वेद्यन्त इति वेदनाः। जीवादो पुधभूदा कम्म-णोकम्मबंधपाओग्गक्खंधा बंधणिज्जा णाम। तेसिं कधं वेदणाभावो जुज्जदे? ण, दव्व-खेत्त-काल-भावेहि वेदणापाओग्गेसु दव्वट्ठियणयमस्सिदूण वेदणासद्दपवुत्तीए अब्भुवगमादो। वेदनात्वमात्मा स्वरूपं येषां ते वेदनात्मानः (* ता अ आ प्रतिषु 'वेदनात्मनः' इति पाठः।) पुद्गलाः इह गृहीतव्याः। कुदो? अण्णेसिं बंधणिज्जत्ताभावादो। ते च बंधणिज्जा पोग्गला खंधसमुद्दिट्ठा (* अ प्रतौ 'समुट्ठिदा' इति पाठः।) खंधसरूवा अणंताणंत(* ता प्रतौ '(अ)णंता--' इति पाठः।) परमाणुपोग्गलसमुदयसमागमेण बंधपाओग्गपोग्गलसमुप्पत्तीदो (* अ प्रतौ 'बंधपोग्गलपाओग्ग --' इति पाठः।)। एदेण एयपदेसिय-दुपदेसियादीणं पोग्गलाणं बंधणिज्जत्तपडिसेहो कदो। ते च खंधा वग्गणसमट्ठिदा (* अ प्रतौ 'समुट्ठिदा' इति पाठः।); वग्गणाहिंतो पुधभूदक्खधाभावादो। एदेण बंधणिज्जपोग्गलाणं णिव्वियप्पत्तपडिसेहो कदो। तेण बंधणिज्जपरूवणे कीरमाणे वग्गणपरूवणा णिच्छएण कायव्वा; अण्णहा तेवीसवग्गणासु इमा चेव वग्गणा बंधपाओग्गा, अण्णाओ (* ता आ प्रत्योः 'अण्णा जो' इति पाठः।) बंधपाओग्गाओ ण होंति त्ति अवगमाणुववत्तीदो।

जो वेदे जाते हैं उन्हें वेदन कहते हैं। जीवसे पृथग्भूत बन्धनयोग्य कर्म और नोकर्म स्कन्ध बन्धनीय कहलाते हैं।

शंका -- वे वेदनरूप कैसे हो सकते हैं?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, जो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावकी अपेक्षा वेदनायोग्य हैं, उनमें द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा वेदना शब्दकी प्रवृत्ति स्वीकार की गयी है।

वेदनपना जिनकी आत्मा अर्थात् स्वरूप है वे वेदनात्मा कहलाते हैं। यहाँ इस पदसे पुद्गलोंका ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, अन्य कोई पदार्थ बन्धनीय नहीं हो सकते। वे बन्धनीय पुद्गल स्कन्धसमुद्दिष्ट अर्थात् स्कन्धस्वरूप कहे गये हैं, क्योंकि, स्कन्धरूप अनन्तानन्त परमाणुपुद्गलोंके समुदायरूप समागमसे बन्धयोग्य पुद्गल होते है। इस पदसे एकप्रदेशी और दोप्रदेशी आदि वर्गणाओंसे पृथग्भूत स्कन्ध नहीं पाये जाते। इस पदसे बन्धनीय पुद्गल

निर्विकल्प होते हैं इस बातका निषेध किया है। इसलिए बन्धनीयका कथन करते समय वर्गणाका कथन नियमसे करना चाहिए। अन्यथा तेईस प्रकारकी वर्गणाओंमें ये वर्गणा ही बन्धयोग्य हैं, अन्य बन्धयोग्य नहीं हैं, यह ज्ञान नहीं हो सकता।

वग्गणाणमणुगमणट्ठदाए तत्थ इमाणि अट्ठ अणुओगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति -- वग्गणा वग्गणादव्वसमुदाहारो अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा अवहारो जवमज्झं पदमीमांसा अप्पाबहुए त्ति।।६९।।

वर्गणाओंका अनुगमन करते समय ये आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं -- वर्गणा, वर्गणासमुदाहार, अनन्तरोपनिधा, परम्परोपनिधा, अवहार, यवमध्य, पदमीमांसा और अल्पबहुत्व।।६९।।

संपहि एदेसिमट्ठण्णमणुयोगद्दाराणमत्थपरूवणा कीरदे। तं जहा -- तत्थ वग्गणपरूवणा किमट्ठं कीरदे? एगपरमाणुवग्गणप्पहुडि एगेगपरमाणुत्तरकमेण जाव महाक्खंधो त्ति ताव सव्ववग्गणाणमेगसेडिपरूवणट्ठं कीरदे। वग्गणदव्वसमुदाहारो किमट्ठमागदो? पुव्वुत्तवग्गणाणं किं समाणा पोग्गला अण्णे वि अत्थि आहो णत्थि, काओ वग्गणाओ धुवाओ काओ वा अद्धुवाओ, काओ सांतराओ काओ वा णिरंतराओ त्ति इच्चादिवग्गणविसेसं चोद्दसअणुयोगद्दारेहि णाणेगसेडिगयं परूवणट्ठमागदो। अणंतरोवणिधा किमट्ठमागदा? परमाणुदव्ववग्गणाहिंतो दुपदेसियं (* ता प्रतौ 'दुपदेहि (सि)य', आ प्रतौ 'दुपदेहिय--' इति पाठः।) दव्ववग्गणा दव्वट्ठपदेसट्ठदाहि (* अ प्रतौ 'दव्वपदेसट्ठदाहि' इति पाठः।) किं सरिसा आहो विसरिसा दुपदेसियदव्ववग्गणादो तिपदेसियदव्ववग्गणा दव्वट्ठपदेसट्ठदाहि (किं) सरिसा आहो विसरिसा एवमणंतरहेट्ठिमहेट्ठिमवग्गणाहिंतो अणंतरउवरिम(उवरिम)वग्गणाणं दव्वपदेसट्ठपरूवणट्ठमागदा। परंपरोवणिधा किमट्ठमागदा? परमाणुपोग्गलदव्ववग्गणादो केद्दूरं गंतूण दुगुणा वा दुगुणहीणा वा होंति त्ति पुच्छिदे एत्तियमद्धाणं गंतूण होति त्ति जाणावणट्ठमागदा। अवहारो किमट्ठमागदो? एक्केक्का वग्गणा दव्वट्ठपदेसट्ठदाहि सव्ववग्गणाणं केवडिओ भागो त्ति जाणावणट्ठमागदो। जवमज्झपरूवणा किमट्ठमागदा? विसेसाहियकमेण (* ता प्रतौ '-- हिया (य) कमेण', अ आ प्रत्योः '-- हियाकमेण' इति पाठः।) गच्छमाणाणं वग्गणाणं कम्हि उद्देसे पदेसं पडुच्च जवमज्झं होदि किं वा ण होदि त्ति पुच्छिदे एत्तियमद्धाणं गंतूण जवमज्झं होदि त्ति जाणावणट्ठमागदा। पदमीमांसा किमट्ठमागदा? सव्ववग्गणाणमुक्कस्सजहण्णाजहण्णादिपदाणं गवेसणट्ठमागदा। अप्पाबहुगपरूवणा किमट्ठमागदा? तेवीसवग्गणदव्वपदेसट्ठदाणं थोवबहुत्तपरूवणट्ठमागदा।

अब इन आठ अनुयोगद्वारोंकी अर्थप्ररूपणा करते हैं। यथा --

शंका -- यहाँ वर्गणा अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा किसलिए की है?

समाधान -- एक परमाणुरूप वर्गणासे लेकर एक एक परमाणुकी वृद्धिक्रमसे महास्कन्ध तक सब वर्गणाओंकी एक श्रेणि है, इस बातका कथन करनेके लिए वर्गणा अनुयोगद्वारकी प्ररूपणा की है।

शंका -- वर्गणाद्रव्यसमुदाहार अनुयोगद्वार किसलिए आया है?

समाधान -- पूर्वोक्त वर्गणाओंके पुद्गल क्या समान हैं या अन्य प्रकार हैं या अन्य प्रकार नहीं हैं, कौन वर्गणाएँ ध्रुव हैं, कौन वर्गणाएँ अध्रुव हैं, कौन वर्गणाएँ सान्तर हैं और कौन वर्गणाएँ निरन्तर हैं; इस प्रकार चौदह अनुयोगद्वारोंके द्वारा नानाश्रेणिगत और एकश्रेणिगत वर्गणाविशेषका कथन करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका -- अनन्तरोपनिधा अनुयोगद्वार किसलिए आया है?

समाधान -- परमाणुद्रव्यवर्गणासे द्विप्रदेशी द्रव्यवर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा क्या सदृश है क्या विसदृश है, द्विप्रदेशी वर्गणासे त्रिप्रदेशी द्रव्यवर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा क्या सदृश है या विसदृश है, इस प्रकार अनन्तर पूर्व पूर्व वर्गणासे अनन्तर उपरिम उपरिम वर्गणाकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताका कथन करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका -- परम्परोपनिधा अनुयोगद्वार किसलिए आया है?

समाधान -- परमाणुरूप पुद्गलद्रव्यवर्गणासे कितनी दूर जानेपर दूना होता है या द्विगुणाहीन होता है ऐसा पूछनेपर इतना स्थान जाकर दूना या आधा होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका -- अवहार अनुयोगद्वार किसलिए आया है?

समाधान -- एक एक वर्गणा द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताकी अपेक्षा सब वर्गणाओंका कितनेवाँ भाग है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका -- यवमध्यप्ररूपणा किसलिए आयी है?

समाधान -- विशेषाधिक क्रमसे जाती हुई वर्गणाओंका किस स्थानपर प्रदेशोंकी अपेक्षा यवमध्य होता है अथवा नहीं होता है ऐसा पूछनेपर इतना स्थान जाकर यवमध्य होता है इस बातका ज्ञान करानेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका -- पदमीमांसा अनुयोगद्वार किसलिए आया है?

समाधान -- सब वर्गणाओंके उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य आदि पदोंकी गवेषणा करनेके लिए यह अनुयोगद्वार आया है।

शंका -- अल्पबहुत्व प्ररूपणा किसलिए आयी है?

समाधान -- तेईस वर्गणाओंकी द्रव्यार्थता और प्रदेशार्थताके अल्पबहुत्वका कथन करनेके लिए यह प्ररूपणा आयी है।

वग्गणा त्ति तत्थ इमाणि वग्गणाए सोलस अणुयोगद्दाराणि (* अ प्रतौ 'सोलसमणिओगद्दाराणि' इति पाठः।) -- वग्गणणिक्खेवे वग्गणणयविभासणदाए वग्गणपरूवणा वग्गणणिरूवणा, वग्गणधुवाधुवाणुगमो वग्गणसांतरणिरंतराणुगमो वग्गणओजजुम्माणुगमो वग्गणखेत्ताणुगमो वग्गणफोसणाणुगमो वग्गणकालाणुगमो वग्गणअंतराणुगमो वग्गणभावाणुगमो वग्गणउवणयणाणुगमो वग्गणपरिणामाणुगमो वग्गणभागाभागाणुगमो वग्गणअप्पाबहुए त्ति।।७०।।

वर्गणाका प्रकरण है। उसके विषयमें ये सोलह अनुयोगद्वार होते हैं -- वर्गणानिक्षेप, वर्गणानयविभाषणता, वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तरनिरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम।।७०।।

संपहि वग्गणा दुविहा -- अब्भंतरवग्गणा बाहिरवग्गणा चेदि। जा सा बाहिरवग्गणा सा पंचण्हं सरीराणं चदुहि अणुयोगद्दारेहि उवरि भण्णिहिदि (* अ प्रतौ 'भणिहिदि' इति पाठः।) जा सा अब्भंतरवग्गणा सा दुविहा एगसेडि-णाणासेडिभेएण। तत्थ एगसेडिवग्गणाए इमाणि सोलस अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। संपहि एदेहि सोलसअणुयोगद्दारेहि जहाकमेण वग्गणाणमणु(*अ आ प्रत्योः '-- मणुगमणं' इति पाठः।)गमं कस्सामो --

वर्गणा दो प्रकारकी है -- आभ्यन्तरवर्गणा और बाह्यवर्गणा। जो बाह्यवर्गणा है वह पाँच शरीरोंसम्बन्धी चार अनुयोगद्वारोंके द्वारा आगे कहेंगे। जो आभ्यन्तरवर्गणा है वह एकश्रेणि और नानाश्रेणिके भेदसे दो प्रकारकी है। उनमेंसे एकश्रेणिवर्गणाके ये सोलह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य है। अब इन सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा यथाक्रमसे वर्गणाओंका विचार करेंगे।

वग्गणाणिक्खेवे त्ति छव्विहे वग्गणणिक्खेवे -- णामवग्गणा ट्ठवणवग्गणा दव्ववग्गणा खेत्तवग्गणा कालवग्गणा भाववग्गणा चेदि।।७१।।

वर्गणानिक्षेपका प्रकरण है। वर्गणानिक्षेप छह प्रकारका है -- नामवर्गणा, स्थापनावर्गणा, द्रव्यवर्गणा, क्षेत्रवर्गणा, कालवर्गणा और भाववर्गणा।।७१।।

निश्चये क्षिपतीति निक्षेपः। सो किमट्ठं कीरदे? प्रकृत(* ता अ आ प्रतिषु 'प्रकृति--' इति पाठः।) प्ररूपणार्थम्। उक्तं च --

जो निश्चयमें रखता है वह निक्षेप है।

शंका -- वह निक्षेप किसलिए करते हैं?

समाधान -- प्रकृतका निरूपण करनेके लिए। कहा भी है--

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च।

संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च।।१।।

अप्रकृत अर्थका निरूपण करनेके लिए, प्रकृत अर्थका कथन करनेके लिए, संशयका विनाश करनेके लिए और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिए निक्षेप किया जाता है।।१।।

छच्चेव णिक्खेवा एत्थ किमट्ठं कदा? ण एस दोसो, छच्चेवे त्ति णियमाभावादो।

शंका -- यहाँ छह ही निक्षेप किसलिए किये गये हैं?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि निक्षेप छह ही होते हैं ऐसा कोई नियम नहीं है।

वग्गणासद्दो णामवग्गणा। सो एसो त्ति बुद्धीए वग्गणासरूवेण संकप्पिदत्थो ट्ठवणवग्गणा। ट्ठवणवग्गणा दुविहा आगम-णोआगमदव्ववग्गणाभेएण। वग्गणापाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्ववग्गणा णाम। णोआगमदव्ववग्गणा तिविहा जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्त-णोआगमदव्ववग्गणाभेएण। जाणुगसरीर-भवियदव्ववग्गणाओ सुगमाओ। तव्वदिरित्त-दव्ववग्गणा दुविहा -- कम्मवग्गणा णोकम्मवग्गणा चेदि। तत्थ कम्मवग्गणा णाम अट्ठकम्मक्खंधवियप्पा। सेसएक्कोणवीसवग्गणाओ णोकम्मवग्गणाओ। एगागासोगाहणप्पहुडि पदेसुत्तरादिकमेण जाव देसूणघणलोगे त्ति एदाओ खेत्तवग्गणाओ। कम्मदव्वं पडुच्च समयाहियावलियप्पहुडि जाव कम्मट्ठिदि (* ता प्रतौ '--प्पहुडि कम्मट्ठिदि' इति पाठः।) णोकम्मदव्वं पडुच्च एगसमयादि जाव असंखेज्जा लोगा त्ति ताव एदाओ कालवग्गणाओ। भाववग्गणा दुविहा आगम-णोआगमभाववग्गणाभेएण। वग्गणापाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभाववग्गणा। ओदइयादिपंचण्णं भावाणं जे भेदा ते णोआगमभाववग्गणा। एवं वग्गणाणिक्खेवे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं (* ता प्रतौ '--द्दारं (१)' इति पाठः।)।

वर्गणा नामवर्गणा है। 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धि द्वारा वर्गणारूपसे संकल्पित अर्थ स्थापनावर्गणा है। द्रव्यवर्गणा दो प्रकारकी है -- आगमद्रव्यवर्गणा और नोआगमद्रव्यवर्गणा। वर्गणाप्राभृतको जाननेवाला किन्तु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीव आगमद्रव्यवर्गणा है। नोआगमद्रव्यवर्गणा तीन प्रकारकी है -- ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्यवर्गणा, भाविनोआगमद्रव्यवर्गणा और तद्व्यतिरिक्तनोआगमद्रव्यवर्गणा। ज्ञायकशरीर और भावि नोआगमद्रव्यवर्गणाएँ सुगम हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमवर्गणा दो प्रकारकी है -- कर्मवर्गणा और नोकर्मवर्गणा। उनमेंसे आठ प्रकारके कर्मस्कन्धोंके भेद कर्मवर्गणा है, तथा उन्नीस प्रकारकी वर्गणाएँ नोकर्मवर्गणाएँ हैं। एक आकाशदेशप्रमाण अवगाहनासे लेकर प्रदेशोत्तर आदिके क्रमसे कुछ घनलोक तक ये सब क्षेत्रवर्गणाएँ हैं। कर्मद्रव्यकी अपेक्षा एक समय अधिक तक आवलिसे लेकर उत्कृष्ट कर्मस्थिति तक और नोकर्मद्रव्यकी अपेक्षा एक समयसे लेकर असंख्यात लोकप्रमाण काल तक ये सब कालवर्गणाएँ हैं। भाववर्गणा दो प्रकारकी है -- आगमभाववर्गणा और नोआगमभाववर्गणा। वर्गणाप्राभृतको जाननेवाला और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीव आगमवर्गणा है। औदयिक आदि पाँच जीवोंके जो भेद हैं वे सब नोआगमवर्गणा है। इस प्रकार वर्गणानिक्षेप अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

वग्गणणयविभासणदाए को णओ काओ वग्गणाओ इच्छदि? णेगम-ववहार-संगहा सव्वाओ।।७२।।

वर्गणानयविभाषणताका प्रकरण है -- कौन नय किन वर्गणाओंको स्वीकार करता है? नैगम, व्यवहार, संग्रह नय सब वर्गणाओंको स्वीकार करते हैं।।७२।।

कुदो? दव्वट्ठियाणं तिण्णमेदेसिं णयाणं विसए छण्णं णिक्खेवाणमत्थित्तं पडि विरोहाभावादो।

क्योंकि, इन तीनों द्रव्यार्थिक नयोंके छहों निक्षेप विषय हैं, इस बातको स्वीकार करनेमें कोई विरोध नहीं आता।

उजुसुदो ट्ठवणवग्गणां णेच्छदि।।७३।।

ऋजुसूत्रनय स्थापनावर्गणाको स्वीकार नहीं करता।।७३।।

अण्णदव्वस्स संकप्पवसेण अण्णदव्वसरूवावत्तिविरोहादो।

क्योंकि, संकल्पवश अन्य द्रव्यका अन्य द्रव्यरूपसे परिवर्तन होनेमें विरोध आता है।

सद्दणओ णामवग्गणां भाववग्गणां इच्छदि।।७४।।

शब्दनय नामवर्गणा और भाववर्गणाको स्वीकार करता है।।७४।।

एदस्स णयस्स विसए अण्णेसिं णिक्खेवाणमभावादो। एत्थ केण णिक्खेवेण पयदं? णोआगमपोग्गलदव्वणिक्खेवेण पयदं, जीव-धम्माधम्म-कालागासदव्व(* अ प्रतौ '-- कालागमदव्व--' इति पाठः।)वग्गणाहि एत्थ पओजणाभावादो।

क्योंकि, इस नयके विषय अन्य निक्षेप नहीं हैं।

शंका -- यहाँ किस निक्षेपका प्रकरण है?

समाधान -- नोआगमपुद्‌गलद्रव्यनिक्षेपका प्रकरण है; क्योंकि, यहाँ पर जीव, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यवर्गणाओंसे प्रयोजन नहीं है।

वग्गणासमुदाहारे त्ति तत्थ इमाणि चोद्दस अणुयोगद्दाराणि -- वग्गणापरूवणा वग्गणाणिरूवणा वग्गणाधुवाधुवाणुगमो वग्गणासांतरणिरंतराणुगमो वग्गणाओजजुम्माणुगमो वग्गणाखेत्ताणुगमो वग्गणाफोसणाणुगमो वग्गणाकालाणुगमो वग्गणाअंतराणुगमो वग्गणाभावाणुगमो वग्गणाउवणयणाणुगमो वग्गणाभागाभागाणुगमो वग्गणाअप्पाबहुए त्ति।।७५।।

वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका प्रकरण है। उसमें ये चौदह अनुयोगद्वार हैं -- वर्गणाप्ररूपणा, वर्गणानिरूपणा, वर्गणाध्रुवाध्रुवानुगम, वर्गणासान्तर-निरन्तरानुगम, वर्गणाओजयुग्मानुगम, वर्गणाक्षेत्रानुगम, वर्गणास्पर्शनानुगम, वर्गणाकालानुगम, वर्गणाअन्तरानुगम, वर्गणाभावानुगम, वर्गणाउपनयनानुगम, वर्गणापरिमाणानुगम, वर्गणाभागाभागानुगम और वर्गणाअल्पबहुत्वानुगम।।७५।।

वग्गणापरूवणं सोलसेहि अणुयोगद्दारेहि कहामो त्ति पइज्जां काऊण पुणो तत्थ आइल्लाणं दोण्णं चेव अणुओगद्दाराणं परूवणं काऊण सेसतत्थतणचोद्दसेहि अणुओगद्दारेहि वग्गणपरूवणमकाऊण वग्गणदव्वसमुदाहारो किमिदि (*ता आ प्रत्योः '-- हारो त्ति किमिदि' इति पाठः।) वोत्तुमारद्धो? ण वग्गणपरूवणा वग्गणामेगसेडिं भणदि। वग्गणदव्वसमुदाहारो पुण वग्गणाणं णाणेगसेडी भणदि, तेण वग्गणदव्वसमुदाहारपरूवणा वग्गणपरूवणाविणाभाविणि त्ति कट्टु वग्गणदव्वसमुदाहारो वोत्तुमाढत्तो; (* अ प्रतौ'-- मादत्तो', आ प्रतौ '-- मादत्तादो' इति पाठः।) अण्णहा गंथबहुत्तभएण पुणरुत्तदोसप्पसंगादो।

शंका -- वर्गणाप्ररूपणा सोलह अनुयोगद्वारोंके द्वारा करेंगे ऐसी प्रतिज्ञा करके फिर वहाँ प्रारम्भके ही दो अनुयोगद्वारोंका कथन करके और शेष चौदह अनुयोगद्वारोंके द्वारा वर्गणाका कथन न करके वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन किसलिए किया जा रहा है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, वर्गणाप्ररूपणा अनुयोगद्वार वर्गणाओंकी एक श्रेणिका कथन करता है, किन्तु वर्गणाद्रव्यसमुदाहार वर्गणाओंकी नाना और एक श्रेणियोंका कथन करता है, इसलिए वर्गणाद्रव्यसमुदाहारप्ररूपणा वर्गणाप्ररूपणाकी अविनाभाविनी है ऐसा समझकर वर्गणाद्रव्यसमुदाहारका कथन आरम्भ किया है। अन्यथा ग्रन्थके बहुत बढ़ जानेका भय था जिससे पुनरुक्त दोषका प्रसंग आता।

वग्गणपरूवणदाए इमा एयपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम।।७६।।

वर्गणाकी प्ररूपणा करनेपर यह एकप्रदेशी परमाणुपुद्गलद्रव्यवर्गणा है।।७६।।

एत्थ ताव एगसेढिमस्सिदूण वग्गणपरूवणं कस्सामो -- एगपदेसियपोग्गलदव्ववग्गणा परमाणुसरूवा; अण्णहा एगपदेसिय त्ति विसेसणाणुववत्तीए। परमाणू च अपच्चक्खो; 'णेव इंदिए गेज्झं' (*ता प्रतौ 'इंदियगेज्झं' इति पाठः।) इदि वयणादो। तदो तत्थ इमा इदि पच्चक्खणिद्देसो ण घडदे? ण, आगमपमाणेण सिद्धपरमाणुविसयबोहे पच्चक्खे संते पच्चक्खणिद्देसोववत्तीए परियम्मे परमाणू अपदेसो त्ति वुत्तो, एत्थ पुण परमाणू एयपदेसो त्ति भणिदो कधमेदेसिं सुत्ताणं ण विरोहो? ण एस दोसो; एगपदेसं मोत्तूण बिदियादिपदेसाणं तत्थ पडिसेहकरणादो। न विद्यन्ते द्वितीयादयः प्रदेशाः यस्मिन् सोऽप्रदेशः परमाणुरिति। अन्यथा खरविषाणवत् परमाणोरसत्त्वप्रसङ्गात्। कधं परमाणुस्स पोग्गलत्तं? अण्णेहि मेलणसत्तिसंभवादो। परमाणूणं परमाणुभावेण सव्वकालमवट्ठाणाभावादो दव्वभावो ण जुज्जदे? ण, पोग्गलभावेण उप्पाद-विणासवज्जिएण परमाणूणं पि दव्वत्तसिद्धीदो।

यहाँ सर्वप्रथम श्रेणिका अवलम्बन लेकर वर्गणाका कथन करते हैं -- एकप्रदेशी पुद्गलवर्गणा परमाणुस्वरूप होती है; अन्यथा 'एकप्रदेशी' यह विशेषण नहीं बन सकता।

शंका -- परमाणु अप्रत्यक्ष होता है; क्योंकि, 'उसका इन्द्रियों द्वारा ग्रहण नहीं होता' ऐसा सूत्रवचन है। इसलिए उसके लिए सूत्रमें 'इमा' ऐसा प्रत्यक्षनिर्देश नहीं बन सकता?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, आगमप्रमाणसे सिद्ध परमाणुविषयक ज्ञानके प्रत्यक्षरूप होनेपर 'इमा' इस प्रकार प्रत्यक्षनिर्देश बन जाता है।

शंका -- परिकर्ममें परमाणुको अप्रदेशी कहा है, परन्तु यहाँपर उसे एकप्रदेशी कहा है, इसलिए इन दोनों सूत्रोंमें विरोध कैसे नहीं होगा?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है; क्योंकि, परमाणुके एकप्रदेशको छोड़कर द्वितीयादि प्रदेश नहीं होते इस बातका परिकर्ममें निषेध किया है। जिसमें द्वितीयादि प्रदेश नहीं हैं वह

अप्रदेश परमाणु है यह उसकी व्युत्पत्ति है। यदि 'अप्रदेश' पदका यह अर्थ न किया जाय तो जिस प्रकार गधेके सींगोंका असत्त्व है उसी प्रकार परमाणुके भी असत्त्वका प्रसंग आता है।

शंका -- परमाणु पुद्‌गलरूप है यह बात कैसे सिद्ध होती है?

समाधान -- उसमें अन्य पुद्‌गलोंके साथ मिलनेकी शक्ति सम्भव है, इससे सिद्ध होता है कि परमाणु पुद्‌गलरूप है।

शंका -- परमाणु सदा काल परमाणुरूपसे अवस्थित नहीं रहते इसलिए उनमें द्रव्यपना नहीं बनता?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, परमाणुओंका पुद्‌गलरूपसे उत्पाद और विनाश नहीं होता इसलिए उनमें भी द्रव्यपना सिद्ध होता है।

इमा दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा णाम।।७७।।

यह द्विप्रदेशी परमाणुपुद्‌गलद्रव्यवर्गणा है।।७७।।

दोण्णं परमाणूणं अजहण्णणिद्ध-ल्हुक्खगुणाणं समुदयसमागमेण दुपदेसियपरमाणुपोग्गलदव्ववग्गणा होदि। परमाणूणं समागमो किमेगदेसेण होदि आहो सव्वप्पणा? ण ताव सव्वप्पणा; अणंताणं पि परमाणूणं समागमेण परमाणुमेत्तपरिमाणप्पसंगादो (* अ प्रतौ 'परिमाणत्तप्पसंगादो' इति पाठः।)। ण च एवं; सेसासेसवग्गणाणमभावप्पसंगा। ण एगदेसेण समागमो वि परमाणुस्स सावयवत्तप्पसंगादो। ण तं पि; अणवत्थापसंगादो। णाणवत्था वि; सयलथूलकज्जाणमणुप्पत्तिसंगादो। ण च एगपदेसाणं दोण्हं परमाणूणं सव्वप्पणा समागमं मोत्तूण एगदेसेण समागमो अत्थि; बिदियादिपदेसाभावादो त्ति? एत्थ परिहारो वुच्चदे -- दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे दोण्णं परमाणूणं सिया सव्वप्पणा समागमो; णिरवयवत्तादो। जे जस्स कज्जस्स आरंभया परमाणू ते तस्स अवयवा होंति। तदारद्धकज्जं पि अवयवी होदि। ण च परमाणू अण्णेहिंतो णिप्पज्जदि, तस्स आरंभयाणमण्णेसिमभावादो। भावे वा ण एसो परमाणू; एत्तो सुहुमाणमण्णेसिं संभवादो। ण च एगसंखंकियम्मि परमाणुम्मि बिदियादिसंखा अत्थि; एक्कस्स दुब्भावविरोहादो। किं च जदि परमाणुस्स अवयवो अत्थि तो परमाणुणा अवयविणा होदव्वं। ण च एवं; अवयवविभागेण अवयवसंजोगस्स विणासे संते परमाणुस्स अभावप्पसंगादो। ण च एवं; कारणाभावेण सयलथूलकज्जाणं पि अभावप्पसंगादो। ण च कप्पियसरूवा अवयवा होंति; अव्ववत्थापसंगादो। तम्हा परमाणुणा णिरवयवेण होदव्वं। तदो सिद्धो सव्वप्पणा परमाणूणं सिया समागमो। ण च णिरयवयपरमाणूहिंतो थूलकज्जस्स अणुप्पत्ती; णिरवयवाणं पि परमाणूणं

सव्वप्पणा समागमेण थूलकज्जुप्पत्तीए विरोहासिद्धीदो। पज्जवट्ठियणए (* अ प्रतौ 'ट्ठियाणए' इति पाठः।) अवलंबिज्जमाणे सिया एगदेसेण समागमो। ण च परमाणूणमवयवा णत्थि; उवरिमहेट्ठिम-मज्झिमोवरिमोवरिमभागाणमभावे परमाणुस्स वि अभावप्पसंगादो। ण च एदे भागा संकप्पियसरूवा; उड्ढाधोमज्झिमभागाणं उवरिमो(*अ आ प्रत्योः '-- परिमो' इति पाठः।)वरिमभागाणं च कप्पणाए विणा उवलंभादो। ण च अवयवाणं सव्वत्थ विभागेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, सयलवत्थूणमभावप्पसंगादो। ण च भिण्णपमाणगेज्जाणं भिण्णदिसाणं च एयत्तमत्थि, विरोहादो। ण च अवयवेहि परमाणू णारद्धो, अवयवसमूहस्सेव परमाणुत्तदंसणादो। ण च अवयवाणं संजोगविणासेण होदव्वमेवे त्ति णियमो, अण्णादिसंजोगे तदभावादो। तदो सिद्धा दुपदेसियपोग्गलदव्ववग्गणा। एसा परूवणा उवरि सव्वत्थ(* ता प्रतौ 'उवरिमसव्वत्थ' इति पाठः।)

अजघन्य स्निग्ध और रूक्ष गुणवाले दो परमाणुओंके समुदायसमागमसे द्विप्रदेशी परमाणुपद्गलद्रव्यवर्गणा होती है।

शंका -- परमाणुओंका समागम क्या एकदेशेन होता है या सर्वात्मना होता है? सर्वात्मना तो हो नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा होनेपर अनन्त परमाणुओंका भी यदि समागम हो जाय तो भी परमाणुमात्र परिणाम प्राप्त होता है। पर ऐसा है नहीं, क्योंकि, एसा होनेपर परमाणुवर्गणाके सिवा शेष सब वर्गणाओंका अभाव प्राप्त होता है। एकदेशेन समागम भी नहीं बनता, क्योंकि, ऐसा होनेपर परमाणु सावयव प्राप्त होता है। यदि परमाणुको सावयव माना जाता है तो अनवस्था दोष आता है। अनवस्था नहीं आवे यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेपर सब स्थूल कार्योंकी अनुत्पत्तिका प्रसंग आता है। और एकप्रदेशी दो परमाणुओंके सर्वात्मना समागमको छोड़कर एकदेशेन समागम नहीं बन सकता, क्योंकि, परमाणुके द्वितीयादि प्रदेश नहीं पाये जाते?

समाधान -- यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं कि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर दो परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है, क्योंकि, परमाणु निरवयव होता है। जो परमाणु जिस कार्यके आरम्भक होते हैं वे उसके अवयव होते हैं और उनके द्वारा आरम्भ किया गया कार्य अवयवी होता है। परमाणु अन्यसे उत्पन्न होता है यह कहना ठीक नहीं है; क्योंकि, उसके आरम्भक अन्य पदार्थ नहीं पाये जाते। और यदि उसके आरम्भक अन्य पदार्थ होते हैं ऐसा माना जाता है तो यह परमाणु नहीं ठहरता, क्योंकि, इस तरह इससे भी सूक्ष्म पदार्थोंका सद्भाव सिद्ध होता है। एक संख्यावाले परमाणुमें द्वितीयादि संख्या होती है यह

कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, एकको दो रूप माननेमें विरोध आता है। दूसरी बात -- यदि परमाणुके अवयव होते हैं ऐसा माना जाय तो परमाणुको अवयवी होना चाहिए। परन्तु ऐसा है नहीं; क्योंकि, अवयवके विभागद्वारा अवयवोंके संयोगका विनाश होनेपर परमाणुका अभाव प्राप्त होता है। पर ऐसा है नहीं, क्योंकि, कारणका अभाव होनेसे सब स्थूल कार्योंका भी अभाव प्राप्त होता है। परमाणुके कल्पितरूप अवयव होते हैं, यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस तरह माननेपर अव्यवस्था प्राप्त होती है। इसलिए परमाणुको निरवयव होना चाहिए। अतः सिद्ध होता है कि परमाणुओंका कथंचित् सर्वात्मना समागम होता है। निरवयव परमाणुओंसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति नहीं हो सकती, क्योंकि, निरवयव परमाणुओंके सर्वात्मना समागमसे स्थूल कार्यकी उत्पत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर कथंचित् एकदेशेन समागम होता है। परमाणुके अवयव नहीं होते यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि उसके उपरिम, अधस्तन, मध्यम और उपरिमोपरिम भाग न हों तो परमाणुका ही अभाव प्राप्त होता है। ये भाग कल्पितरूप होते हैं यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, परमाणुमें ऊर्ध्वभाग, अधोभाग और मध्यभाग तथा उपरिमोपरिम भाग कल्पनाके विना भी उपलब्ध होते हैं। तथा परमाणुके अवयव हैं इसलिए उनका सर्वत्र विभाग ही होना चाहिए ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, इस तरह माननेपर तो सब वस्तुओंके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है। जिनका भिन्न भिन्न प्रमाणोंसे ग्रहण होता है, और जो भिन्न भिन्न दशावाले हैं वे एक हैं यह कहना भी ठीक नहीं है; क्योंकि, ऐसा माननेपर विरोध आता है। अवयवोंसे परमाणु नहीं बना है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, अवयवोंके समूहरूप ही परमाणु दिखायी देता है। तथा अवयवोंके संयोगका विनाश होना चाहिए यह भी कोई नियम नहीं है, क्योंकि, अनादि संयोगके होनेपर उसका विनाश नहीं होता। इसलिए द्विप्रदेशी परमाणु पुद्गल द्रव्यवर्गणा सिद्ध होती है। यह प्ररूपणा आगे सर्वत्र करनी चाहिए।